मंत्र·तंत्र·यंत्र
विज्ञान

सूचना

सिद्धाश्रम साधक परिवार समस्त साधकों की प्राणमयी संस्था है, इसका जोधपुर में रजिस्ट्रेशन किया जा चुका है, और पूर्ण नियम उपनियम कार्य पद्धति उद्देश्य और मान्यताओं के साथ सरकार ने इसका रजिस्ट्रेशन किया है. जिसका नम्बर है, नं – ६१४-५-६-३०३०-६०० दिनांक २५–४–८६

२– इसी प्रकार " सिद्धाश्रम साधक परिवार " नाम को अखिल भारतीय स्तर पर रजिस्ट्रेशन करवाया जा चुका है, अब भारत वर्ष में कोई भी अन्य इस नाम का उपयोग नहीं कर सकता, क्योंकि यह 'कॉपी राइट एक्ट' के अन्तर्गत है, भारत सरकार द्वारा दिये हुए इसके रजिस्ट्रेशन नम्बर है,- एस २००५६ –६ जुलाई ८६

३– भविष्य में यदि आप कहीं पर भी यज्ञ या साधना शिविर लगाते हैं, तो सिद्धाश्रम साधक परिवार के केन्द्रीय कार्यालय से अनुमति लेनी आवश्यक मानी गई है. कार्यालय का पता – मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.)

४- हमारे आह्वान पर आप में से अधिकांश पत्रिका पाठकों, साधकों और शिष्यों ने नयी आटोमेटिक मशीन लगाने के लिए धन राशि भेजी है, जो कि आपके द्वारा भेजी गयी हमारी धरोहर धनराशि है, और यह धनराशि आपके नाम से ही आपके लिए जमा है, जिससे हम यह आटोमेटिक मशीन खरीद रहे हैं, फलस्वरूप आप लोगों को श्रेष्ठ स्तर की पत्रिका प्राप्त हो सके।

नियमानुसार जैसा कि पहले भी सभी सदस्यों को बताया जा चुका है कि रजिस्टर्ड पत्र से सूचना देने के पांच साल बाद आप द्वारा मशीन के लिए भेजी गई धरोहर धनराशि को आप बिना व्याज के वापिस प्राप्त कर सकते हैं, यह एक प्रकार से आपकी अमानत, पत्रिका कार्यालय में जमा है।

आपने आगे बढ़ कर जो सहयोग दिया, और एक आवाज पर आपने जिस प्रकार से नई मशीन के लिए सहयोग देते हुए धरोहर धनराशि मनीआर्डर, बैंक ड्राफ्ट और नगद द्वारा दी है, उसके लिये पत्रिका कार्यालय आपका आभारी है, अभी भी हमारे पास इस प्रकार का सहयोग बराबर प्राप्त हो रहा है।

हम शीघ्र ही यह मशीन लगा रहे हैं, जिससे कि आपको सुन्दर छपाई के साथ यह आप की प्रिय पत्रिका आकर्षक साज सज्जा के साथ समय पर प्राप्त हो सके।

५– यन्त्र और सामग्री हम शिष्यों से ही प्राप्त कर उन्हें श्रेष्ठ पण्डितों से मन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा से सम्पन्न करवा कर, उसे सिद्ध और तेजस्वीवान बना कर आप लोगों तक ये यन्त्र और साधना सामग्री भिजवाते हैं, इससे संबंधित व्यय पण्डितों की दक्षिणा, पूजन सामग्री आदि है।

एक बार मैं पुनः आप लोगों के प्रति नवीन प्रिन्टिंग मशीन के लिए सहयोग देने हेतु अपना आभार प्रदर्शित करता हूं।

–सम्पादक

वर्ष–९

अंक–१०

अक्टूबर–१९८९

※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※ ※

मुद्रक प्रकाशक लेखक

एवं

सम्पादक

योगेन्द्र निर्मोही

सम्पर्क—

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग

हाईकोर्ट कोलोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः कृतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोन्मुखी उन्नति प्रगति और

भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

गुरु भावः परं तीर्थं मन्य तीर्थं निरर्थकम् ।

सर्व तीर्थ मयं देवि श्री गुरोश्चरणाम्बुजम् ॥

— गुरु गीता

गुरु का घर ही तीर्थ है, अन्य तीर्थ तो निरर्थक है, श्री गुरु के समीप कुछ क्षण व्यतीत करना ही और उनके चरणामृत का पान ही सर्व तीर्थमय है ।

डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कोलोनी, जोधपुर –३४२००१ (राजस्थान)

मुरादी यंत्र

पत्रिका के इन पृष्ठों पर कई प्रयोग दिये हैं, और पाठकों ने उन प्रयोगों को सिद्ध कर सफलताएं पाई है।

पर इस बार मैं एक आश्चर्यजनक प्रयोग दे रहा हूं, यह प्रयोग मुझे कुछ ही दिनों पहले एक ओलिया फकीर से प्राप्त हुआ था, उसका नाम मशहूर है, वह घूमता रहता है, परन्तु लोगों का उस पर इतना अधिक विश्वास है, कि वे उसे भगवान से भी ज्यादा मानते हैं।

उनके ही एक शागिर्द है, जो पिछले दिनों पत्रिका कार्यालय में आये थे, वे उनके साथ लगभग तीन वर्ष तक रहे है इन तीन वर्ष की सेवाओं के बाद ही उन्हें यह प्रयोग उन ओलिया फकीर से प्राप्त हुआ था।

बातचीत में उन्होंने बताया कि कभी कभी तो चमत्कार हो जाता हैं, विश्वास नहीं होता कि ऐसे ऐसे छोटे प्रयोग इतना महान कार्य कर डालते है। जो कार्य ऊंची और दुर्लभ साधनाओं से नहीं हो पाते, वे इन फकीरों की बताई हुई तरकीबों से प्राप्त हो जाते है। इस मुरादी यन्त्र की विधि जानने के लिए मैं उनके साथ तीन वर्ष तक रहा और तब जा कर मुझे यह तरीका मिला।

मैने इसको जितनी बार भी आजमाया, उतनी ही बार यह सौ टंच खरा उतरा। वास्तव में ही इन मुसलमानी फकीरों के पास गजब की साधनाएं और विधियां हैं, पर यह मुरादी यंत्र तो अपने आपमें लाजबाब है।

मुरादी यंत्र

जब उनसे मैंने इस प्रयोग की तरकीब जाननी चाही तो उन्होंने पहले तो टालमटोल की, परन्तु बाद में उन्होंने सारी तरकीब पूरी तरह से समझा दी। समझने के बाद वास्तव में ही मुझे ऐसा लगा कि यह ओलिया फकीर की दी हुई तरकीब हजारों हजारों साधकों और पाठकों की इच्छाओं को पूरी कर सकती है।

इस साधना में न तो कोई पूजा की सामग्री की जरूरत है, और न कोई विशेष मंत्र जपने की, न पीली धोती या आसन बिछाने की जरूरत है, और न संस्कृत पाठ करने की। यह तरकीब तो सरल है, मगर कभी कभी सामान्य से दीखने वाली तरकीब भी हजारों साधनाओं से ऊंची हो जाती है। एक छोटी सी पिस्तोल की गोली छः फुट के आदमी को समाप्त कर सकती है। एक छोटी सी चींटी हाथी को मार सकती हैं, इसी प्रकार यह मुरादी यंत्र पहिनने वाले की किसी भी प्रकार की इच्छा को पूरा कर सकता हैं।

मुराद का मतलब होता है, अपनी जो भी इच्छा हो वह तुरन्त पूरी हो जाय, ओलिया फकीर ने जिसे उर्दू ही लिखनी और पढ़नी आती हैं उसने अपनी हाथ की लिखी हुई किताब में इस मुरादी यंत्र की कई विशेषताएं बताई हैं, जिनमें से कुछ इस प्रकार से है-

१- इस मुरादी यंत्र को पास में रखने से उसकी रक्षा होती रहती है, और शत्रु उसका कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते ।

२- इस ताबीज को जेब में रख कर कोर्ट कचहरी जावे, तो जरूर जरूर सफलता मिले ।

३- इस ताबीज को जेब में रख कर शत्रु के पास जाय तो शत्रु वश में होय, और दुश्मनी भूल जाय ।

४- ताबीज को गले में पहन कर प्रेमिका के सामने जाय और प्रेमिका की नजर इस ताबीज पर पड़े तो वह वश में होय और उसके चारों ओर घूमती रहे ।

५- इस ताबीज को गिलास में डाल कर सुलेमानी मंत्र पढ़ कर वह पानी बीमार को पिला दे, तो उसकी बीमारी काफूर होय ।

६- इस ताबीज को जमीन में गाड़े तो जमीन में अगर धन गड़ा हुआ हो तो दिखाई दे ।

७- ताबीज के साथ इलायची या सुपारी बांध कर सुलेमानी मंत्र ग्यारह बार पढे और वह सुपारी या इला-यची जिस पुरूष या स्त्री को दे, वह तुरन्त वश में होय और कहा करे ।

८- इस ताबीज को कमर में बांधे तो बांझ स्त्री के भी बच्चा होय ।

९- इस ताबीज को अंगूठी में जड़वा कर उंगली में पहन कर जुआ खेले, तो वह जीतता रहे ।

१०- मिश्री के साथ इस ताबीज को बांध कर ग्या-रह बार सुलेमानी मंत्र बोले और मिश्री पत्नी को या खाविंद को खिलावे तो वह वश में होय तथा घर में सुख शान्ति रहे ।

११- यह ताबीज कुंवारी लड़की गले में पहने, तो जल्दी से जल्दी उसका विवाह हो ।

१२- यह मुरादी यंत्र रात को अपनी मुट्ठी में बन्द कर जो मुराद मांगे वह तुरन्त पूरी हो ।

१३- इस मुरादी ताबीज को सामने रख कर सुले-मानी मंत्र की उलटी माला से मंत्र पढ़े तो भूत प्रेत वश में होय और गुलाम की तरह काम करें ।

१४- काजल की डिबिया के साथ इस मुरादी यंत्र को बांध कर २१ बार सुलेमानी मंत्र उस काजल की डिब्बी पर पढ़े और वह काजल जिसके कपड़े पर भी लगावे वह वश में होय और जीवन भर हुकम माने ।

१५- इस मुरादी यंत्र को रात में हीने के इत्र का दिया जला कर उसमें ताबीज डाल कर सुलेमानी मंत्र पढे और हकीक माला से उलटी माला करते हुए मंत्र करे तो अप्सरा वश में होय और चौबीस घण्टे हाजर रहे ।

उस औलिया फकीर के हाथ की लिखी हुई किताब में और भी कई फायदे बताये हुए है पर जिस चेले के पास वह किताब थी उसने कहा कि मैंने कई तरकीबे आजमाई है और जो फायदे इसमें लिखे है वे सौ फी सदी सही है ।

मुरादी यंत्र तरकीब

उस शागिर्द ने मुरादी यंत्र बनाने की तरकीब बता दी थी, जो कि थोड़ी पेचीदा हैं, पर सही है इस प्रकार का मुरादी यंत्र हासिल करे, और फिर शुक्रवार की रात को चार पाई पर बैठ कर नीचे लिखा हुआ यंत्र अपने हथेली पर स्याही से लिखे और सो जाय । सुबह फिर हाथ धो कर बिना स्नान किये चारपाई पर बैठे बैठे ही हथेली पर इस यंत्र को स्याही से हथेली पर लिखे और हथेली में 'मुरादी यंत्र' को रख कर गौर से देखे तथा सुलेमानी मंत्रपढ़े तथा अपनी मुराद मांगे, ऐसा पांच दिन करें, तो यह मुरादी यंत्र सिद्ध होता है फिर इस मुरादी यंत्र का जैसा उपयोग पीछे बताया है, वैसा करे तो सफलता मिले । बुरी बातों

से और नशे आदि से अपने आपको बचावे और न गोश्त खावे मुमकिन मुराद अवश्य पूरी होगी।

हथेली पर लिखा जाने वाला यंत्र

वं	भं	मं	डं
१	११	२१	३१
४१	५१	६१	७१
कं	नं	रं	सं

इस यंत्र को किसी भी प्रकार की स्याही से और किसी भी प्रकार की कलम से बांई या दाहिनी हथेली पर लिखना चाहिए और फिर उस पर तैयार किया हुआ यंत्र जिसको 'मुरादी यंत्र' कहते है, और जो विशेष तरकीब से तैयार किया जाता है, वह हथेली में लिखे हुए इस यंत्र पर रख कर सुलेमानी मंत्र पढे।

सुलेमानी मंत्र

।। अरहीना अरीना फरीना सफरीना
अकीय अकवीय सदुनी ।।

उस औलिया फकीर ने जो शर्तिया मुरादी यंत्र बनाने की तरकीब बताई थी, उसने यह भी कहा था, कि इस यन्त्र को बेंचे नहीं, और गलत उपयोग न करें, हालांकी वैसा यन्त्र तैयार करना कठिन है, फिर भी उस औलिया फकीर के शागिद ने कुछ तावीज पत्रिका कार्यालय को दिये है।

इस प्रकार के तावीज को पाने के लिए कोई धन राशि भेजने की जरूरत नहीं है, हमारे पास बहुत ही कम तावीज इस प्रकार के हैं, जो उस शागिद ने बना कर हमें दिये हैं, आप पत्रिका का एक नया सदस्य बना कर इस तावीज को प्राप्त कर सकते हैं, विश्वास होने पर ही इस तावीज को मंगावे।

मुरादी तावीज प्रपत्र

आप नीचे दिये हुए प्रपत्र को अलग कागज पर उतार कर हमे भेज दें, हम आपको १०५)रू० की वी० पी० से यह मुरादी तावीज भेद देंगे, इसम आपके घर का कुछ भी नहीं लगेगा, क्योंकि यह धनराशि आप जिसको पत्रिका सदस्य बना रहे है, उससे हासिल कर सकते हैं।

आप मुझे १०५)रू० की वी०पी० से मुरादी तावीज भेज दीजिये, और मेरे वी०पी० छूटने पर आप नीचे लिखे मेरे मित्र को पत्रिका का सन् १९८९ का सदस्य बना कर पत्रिकाएं भेज दीजिए, और उसकी रसीद मुझे भेज दीजिए, मैं वी०पी० छुड़ाने का वायदा करता हूँ।

मेरीं पत्रिका सदस्यता संख्या..............................
मेरा नाम..............................
मेरा पूरा पता..............................
....

वी०पी० छूटने पर आप नीचे लिखे मेरे मित्र को पत्रिका का सदस्य बना कर उसे पूरी पत्रिकाएं भेज दीजिए।

मेरे मित्र का नाम ....
मेरे मित्र का पूरा पता..............................
....

नोट— उस शागिर्द ने बहुत ही कम मुरादी यन्त्र तैयार करके हमें दिये हैं, अतः जिनका प्रपत्र पहले आयेगा, उन्ही को यह मुरादी यंत्र भेजना संभव हो सकेगा। मुरादी यंत्र खत्म होने पर हम भेजने में असमर्थ होंगे, इस संबंध में पत्रिका की किसी प्रकार की कोई जिम्मेवारीनहीं है।

मैं सुगन्ध का झौंका हूं

मुझे
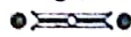
अपने प्राणों में भर लो

अभी अभी गुरू पूर्णिमा बीती है, मुझे आपने देखा है और मुझसे मिल कर वापिस अपने अपने घरों में लौट गये हो, उसी घर में जहां परेशानियां हैं, जीवन की अड़चनें हैं, पारिवारिक बाधाएं हैं, और मानसिक तनाव है अगली बार तुम फिर आओगे और इसी प्रकार वापिस उन्हीं दुखों, परेशानियों, अड़चनों और तनावों में लौट जाओगे।

यह सैकड़ों वर्षों से हो रहा है, और यदि इसी प्रकार चलता रहा, तो आगे भी सैकड़ों वर्षों तक चलता रहेगा, पर यह गलत है, **मैं देखने की वस्तु नहीं हूं, मेरे चरण या मेरा शरीर मात्र छूने भर का पिण्ड नहीं है, मैं तो एक सुगन्ध का झोंका हूं, जो देखने की चीज नहीं है जो पहिचानने का पदार्थ नहीं है, यह तो एक ऐसा दिव्य झोंका है, जिसे अपने प्राणों में भरने की जरूरत है, शरीर के रोम रोम में नस-नाड़ियों में और रक्त की एक एक बूंद में आत्मसात करने की सहज प्रक्रिया है,** और जब तुम यह सीख लोगे, तब गुरू एक दर्शनीय वस्तु नहीं रह जायेगा, वह तुम्हारी प्रसन्नता का एक भाग बन जायेगा, वह तुम्हारी जिन्दगी का एक हिस्सा बन जायेगा, वह तुम्हारे रक्त का एक कतरा बन जायेगा।

और यही तो होना चाहिए, जो नहीं हो रहा है, यही तो करना चाहिए जो हम नहीं कर रहे हैं, हम

दुखों और तनावों की दुर्गन्ध में इतने अधिक रच-पच गये हैं, कि हमें दिव्य सुगन्ध का परिचय ही नहीं रहा, हम समाज की उस दुर्गन्ध से इतने अधिक परिचित हो चुके हैं, कि उससे हट कर यदि कोई दूसरा झोंका एक क्षण मात्र के लिए आता भी हैं, तो हम उसे पहिचान नहीं पाते, और वह झोंका हमारी जिन्दगी के पास से निकल जाता है, और हम फिर उसी परेशानियों और तनावों की दुर्गन्ध में रम जाते हैं, क्योंकि यही हमारी नियति बन गई है।

और मैं पिछले कई जन्मों से तुम्हारे साथ हूं, मैं तुम्हारा गुरु हूं और तुम मेरे शिष्य हो, तुम शरीर हो, तो मैं उसकी धड़कती हुई आत्मा हूं, प्राणों का स्पन्दन हूं, बिना प्राणों के शरीर का क्या मूल्य रह जाता है, करोड़पति का शरीर भी बिना प्राणों के श्मशान में फूंकने लायक हो जाता है, महान विद्वान का निष्प्राण शरीर भी जलाने के काम ही आता है घर वाले भी बिना प्राण के शरीर को जल्दी से जल्दी उठा कर श्मशान में ले जाने को आतुर हो जाते हैं।

और बिना गुरु-स्पन्दन के तुम्हारा शरीर भी एक खोखला प्राण रहित मात्र शरीर रह गया है. ऐसा शरीर चलता फिरता तो है, पर जिसमें आनन्द नहीं है, ऐसा शरीर जो परिवार से उपेक्षित है, न बेटे को इसकी जरूरत है, न सगे सम्बन्धियों को इसकी अनिवार्यता है, क्योंकि यह शरीर प्राणश्चेतना हीन है, ऐसे शरीर को ढोना तुम्हारी मजबूरी बन गई है, ऐसे शरीर को धीरे धीरे घसीटते घसीटते श्मशान तक ले जाने के लिए तुम प्रयत्नशील हो, और तुम्हारे चारों तरफ का समाज तुम्हें इस कार्य में सहायता दे रहा है।

इसीलिए तो कहता हूं, कि तुम्हारी इस मृत देह को प्राणों का स्पन्दन चाहिए, चाबी भरे हुए गुड्डे की तरह चलते-फिरते इस खिलौने में प्राणों की चेतना चाहिए, आनन्द की ऊष्मा चाहिए, और यह तभी हो सकता है, जब मेरे प्राणों से अपने प्राण जोड़ सको, मेरे हृदय से अपने हृदय का एकाकार कर सको, मेरे अन्दर अपने आप को समाहित कर सको, मेरे इस आनद के प्रवाह में मस्ती के साथ स्नान कर सको।

इसीलिए तो कहता हूं, कि मैं मात्र देखने की वस्तु नहीं हूं, इसीलिए तो कहता हूं, कि मैं मात्र स्पर्श करने का पदार्थ नहीं हूं, ऐसा तो तुम कई-कई वर्षों से कर रहे हो, शायद चार छः जन्मों से ऐसा ही कर रहे हो, पर ऐसा करने से इस मृत शरीर में आनन्द की चेतना नहीं आ सकती, इसके लिए यह जरूरी है, कि तुम मेरे प्राणों से निकलने वाली सुगन्ध को पहिचानने की क्षमता प्राप्त करो, उस सुगन्ध से अपने प्राणों को भर लो, जब तुम अपने आप को शक्तिहीन अनुभव करो, जब तुम अपने आप को मृत तुल्य अनुभव करो, तब तुम मेरे पास आ जाओ और मुझमें एकाकार होने का प्रयत्न करो, मेरे साथ हंसो, मेरे साथ प्रकृति की तरह एकाकार हो जाओ, मेरे साथ अपने प्राणों का सम्बन्ध स्थापित करो, और अपने आप को स्फूर्तिवान, तरोताजा बना कर वापिस अपनी दुनियां में लौट जाओ।

तुम्हारी वह दुनियां वैसी ही है, जैसी तुम छोड़ कर आये हो, वहां पर वैसे ही कठघरे हैं, छोटी छोटी बातों पर लड़ने झगड़ने की वैसी ही प्रवृत्तियां हैं, उनकी आंखों में वैसा ही संदेह, वैसा ही चौकन्नापन है, वे कुछ नहीं बदले हैं, और वे बदल भी नहीं सकते।

क्योंकि उनके पास कोई आनन्द का स्रोत नहीं है, जहां जा कर वे अपने आप को आनन्द में डुबो सके, उनके पास दिव्य सुगन्ध का कोई स्रोत नहीं है, जहां वे अपने आप को रच-पच सकें, परन्तु जब तुम लौटोगे, तो तुम्हारे हृदय में एक नयी उमंग होगी, एक नई चेतना होगी, एक नई प्राणों की ऊष्मा होगी, तुम्हारे चेहरे पर एक नया आभामण्डल होगा, तुम्हारे शरीर के रोम रोम में एक अद्वितीय सुगन्ध का प्रवाह होगा और इसीलिए तुम उन सबसे अपने आप को अद्वितीय अनुभव

कर सकोगे, वे अहसास करेंगे, कि यह सब क्या हो गया है, वे आश्चर्यचकित होंगे, कि ऐसा कैसे हो गया है।

वे भी जाते जरूर हैं, मगर गंगा के गंदले पानी में स्नान करके अपने आप को धन्य मान लेते हैं, वे भी जाते जरूर हैं, उन भगवे कपड़े पहने हुए पाखण्डी साधुओं के पास, जिनका एक मात्र उद्देश्य अपना आश्रम बनाना होता है. जिनका एक मात्र लक्ष्य भीड़ जुटाना होता है, जिनकी एक मात्र चिन्ता ज्यादा से ज्यादा गुरू दक्षिणा प्राप्त करने की होती है, वे तो स्वयं कंगले हैं, वे तो स्वयं भिखारी हैं, जो शिष्यों से याचना करते हैं, इस आश्रम में एक कमरा बना देना है, इस मन्दिर में तुम्हारे खर्च पर एक मूर्ति स्थापित कर देनी है, जो स्वयं भीख की बातें करते हैं, जो स्वयं भिखारी हैं, जो स्वयं कंगाल हैं, वह शिष्यों को दे भी क्या पायेगा, जो स्वयं परिवार से, घर से, और समाज से दुखी हो कर आश्रमों में छिप कर बैठे हैं, वे समाज की चुनौतियों को झेल भी कैसे सकते हैं ? जो स्वयं मरी हुई लाश को भगवे कपड़े के नीचे ढक कर घसीट रहे हैं, वे शिष्यों को दे भी क्या पायेंगे।

इसीलिए मैं कह रहा हूं, कि तुम्हें मृत नहीं होना है, इसीलिए मैं कह रहा हूं, कि तुम्हें अपनी जिन्दगी घसीटते हुए नहीं बिता देनी है, तुम्हें सुगन्ध से, ज्ञान की सुगंध से, चेतना की सुगन्ध से, प्राणों की सुगन्ध से तरोताजा होना है, और अपने उसी समाज में लौट जाना है, उन लोगों को भी इस ताजी हवा का अहसास कराना है, उन लोगों को भी प्राणों का स्पन्दन प्रदान करना है, उन मरी हुए सड़ी गली देह में एक चेतना, एक उमंग और साधना की एक नई शक्ति भरना है, और यह तुम कर सकते हो, क्योंकि तुम दैविक सुगन्ध के भण्डार से सम्बन्धित हो, क्योंकि तुम साधनाओं के अजस्र भण्डार से जुड़े हुए हो, क्योंकि तुम प्राणश्चेतना के प्रवाह से अनुप्राणित हो, और यह करना समाज में परिवर्तन लाना है, समाज को ज्यादा सुखी बनाना है, उनकी सड़ी गली मान्यताओं पर प्रहार करना है, साधनाओं के प्रति जो उनके रोग ग्रस्त चिन्तन है, उसे समाप्त करना है और उन्हें नवीन आनन्द से भर देना हैं।

जो मेरे साथ हैं, वे बहुत बड़ा कार्य कर रहे हैं, जिस प्रकार ऊपर से भले ही समुद्र शान्त दिखाई दे, पर उसके अन्दर बहुत हलचल होती है, आलोड़न-विलोड़न होता है, ठीक ऐसा ही यहां रहने वाले शिष्य कर रहे हैं, बाहर से आने वाले लोगों को तो इस समुद्र का उपरी भाग ही दिखाई देगा, जो शान्त है, जिसमें हलचल नहीं है, पर जो अन्दर घुस कर देखेगा, उसे अहसास होगा, कि वास्तव में ही साथ में रहने वाले ये शिष्य बहुत कुछ प्राप्त कर रहे हैं इनमें पूरे समुद्र का मथने की क्षमता आ रही है. ये अपने परिश्रम से पूरे भारत वर्ष में सुगन्ध फैला रहे हैं, पत्रिका में प्रकाशित गुलाब के पुष्पों को समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रदान कर रहे हैं, पुस्तकों में छिपी हुई सुगन्ध को घर घर पहुंचाने का उपाय कर रहे हैं, इन्होंने अपना जीवन दाव पर लगा दिया है, जो जीवन को चैलेंज के रूप में लेने की हिम्मत रखता है, वही बहुत कुछ कर सकता है और ये ऐसा ही कर रहे हैं।

इसीलिए तो मैं कहता हूं, कि तुम कई कई जन्मों से मेरे साथ होते हुए भी किसी न किसी स्थान पर अटक गये हो, शायद समाज की पगडंडियों की भूल भुलैया में अपने आप को भटका दिया है, ऐसी स्थिति में तुम्हें और ज्यादा भटकने की अपेक्षा मेरे पास आ जाना है, बार बार जन्म लेने की अपेक्षा एक बार में ही सब कुछ दाव पर लगा कर सब कुछ प्राप्त कर लेना है, जब तुम अपने आप को अटका हुआ महसूस करो, जब तुम मन में भटकन और बेचैनी अनुभव करो, तब तुम्हें बिना हिचकिचाहट के मेरे पास आ जाना चाहिए, तब तुम्हें उस सड़े गले समाज को एक तरफ रख कर नंगे पांव दौड़ते हुए आ जाना है, और अपने शरीर को अपने प्राणों को मेरे ज्ञान की सुगन्ध से, मेरी चेतना के स्पन्दन से अपने आपको भर लेना है, अपने जीवन को प्रफुल्लित और तरोताजा बना देना है, मुझे देखने या स्पर्श करने

की अपेक्षा मेरे प्राणों से एकाकार हो जाना है, , तब तुम्हें अनुभव होगा, कि आनन्द क्या है, तब तुम्हें ज्ञात होगा, कि मस्ती क्या है, तब तुम प्रकृति के संगीत को समझ सकोगे, तब तुम बहती हुई नदी के गायन को सुन सकोगे, तब तुम समाधि की चेतना में अपने प्राणों को आप्लावित कर सकोगे, तब तुम्हारा भ्रम दूर हो सकेगा, तब तुम्हारे संदेह मिट सकेंगे, जब तुम अपने आप पर मेरे स्नेह की वर्षा होने दोगे, तब तुम स्वर्गिक आनन्द का अनुभव कर सकोगे, तब तुम में आत्म विश्वास, प्राणश्चेतना उमंग जोश और मस्ती आ सकेगी। मैं यह सब कुछ देने के लिए तैयार हूं। जरूरत तो इस बात की है, कि तुम मेरे पास आ सको, तुम अनुभव कर सको, तुम मेरे स्नेह में भीग सको, तुम मेरे आनन्द की फुहार को अपने शरीर पर अनुभव कर सको, तुम मेरे पास बैठ सको, और अपने जीवन को आनन्दयुक्त बना सको।

तुमने जन्म लेकर कोई महान कार्य नहीं किया है, तुम्हारा जन्म तो एक संयोग है माता पिता के देह सुख की एक उपस्थिति है, यह कोई महान कार्य नहीं है, तुम्हारा जन्म लेना कोई युगान्तरकारी घटना नहीं है, यह घटना तो तब बनेगी जब तुम आनन्द के अक्षय भण्डार से अपने आपको आप्लावित कर सकोगे, जब तुम्हें गुरू के पास जाने की एक तड़फ पैदा होगी, जब जीवन की जटिलताओं से निकल कर उस आनन्द प्रवाह के पास बैठने की इच्छा होगी, जब तुम अपने शरीर में प्राणों की चेतना दे सकोगे, जब तुम अपने शरीर को सुगन्धमय बना सकोगे, और यह सब तुम्हारे हाथों में है, यह सब तुम्हारे प्रयत्नों से सभव है, यह सब तुम्हारे करने से ही हो सकता है क्योंकि समुद्र तो अपनी जगह स्थिर खड़ा अपनी बांहे फैलाएं प्रत्येक नदी को अपने आपमें समेटने के लिए आतुर है, आवश्यकता तुम्हें नदी बनने की है, हहराती हुई दौड़ती हुई समुद्र की बांहों में अपने आपको छिपा लेने की, अपने आपको विसर्जित कर देने की है, अपना अस्तित्व मिटा देने की है और जब तुम ऐसा कर सकोगे, तब तुम में एक नया बुद्ध पैदा होगा, तब तुम में एक नया शंकराचार्य पैदा होगा, तब तुम में एक नया वशिष्ठ या विश्वामित्र पैदा होगा।

और मैं तुम्हें आज से नहीं, पिछले कई जन्मों से आवाज दे रहा हूं, पर शायद समाज ने तुम्हारे कानों में कीलें ठोक दी है, शायद परिवार ने तुम्हारे पांवों में बेड़ियां पहना दी है, शायद लोगों ने तुम्हारे प्राणों की हत्या कर दी है और इसीलिए तुम मेरी आवाज को सुन नहीं पा रहे हो, इसीलिए मेरी उपस्थिति को तुम अनुभव नहीं कर पा रहे हो, इसीलिए तुम्हारी आंखें मेरे शरीर से टकरा कर लौट जाती हैं, इस शरीर के अन्दर जो गुरू है, जो ज्ञान पुंज है, जो चेतना प्रवाह है, वहां तक तुम पहुंच नहीं पाते क्योंकि तुमने ऐसा प्रयत्न ही नहीं किया, क्योंकि तुम केवल चरण छू कर ही अपने समाज में लौट गये, क्योंकि तुम्हें वह विधा या ज्ञान ही नहीं था, कि किस प्रकार से अपने गुरू से एकाकार हो सकें, आत्मसात हो सकें, उनकी कृपा की फुहार में भीग सकें, और अपने तन-मन को प्रफुल्लित कर सकें।

और इसीलिए कह रहा हूं कि अब भी समय है, अब भी तुम जाग सकते हो, अब भी तुम मेरे साथ नाच सकते हो मेरे साथ झूम सकते हो, मेरे साथ प्रकृति का संगीत सुन सकते हो, मेरे शरीर के रोम रोम से निकलती हुई संगीत की लहरियों को आत्मसात कर सकते हो, और जो शरीर मात्र बाप के दैहिक सुख से उत्पन्न हुआ है जो शरीर एक सयोग है, उसे स्वर्गिम बना सकते हो। इसके लिए जरूरत है, बिना कार्य के भी, बिना स्वार्थ के भी मेरे पास आने की, मेरे साथ बैठने की, मेरे साथ आनन्द प्राप्त करने की और मेरे प्राणों से अपने प्राणों को एकाकार करने की।

और जब तुम ऐसा कर लोगे, तब तुम्हारे शरीर से एक प्रकाश फूटेगा, तब तुम्हारी आत्मा से ज्ञान का सूर्य उदय होगा, तब तुम्हारे रोम रोम से आनन्द की लहरियां पूरे समाज में फैल सकेगी, तब तुम बुद्ध बन सकोगे, तब तुम शंकराचार्य बन सकोगे, तब तुम जीवन्त व्यक्तित्व बन सकोगे।

और तुम ऐसे बन सको, ऐसा ही मेरा आशीर्वाद प्रत्येक क्षण तुम्हारे साथ है।

संसार का दुर्लभ

सौभाग्य प्राप्ति प्रयोग

(३-११-८९)

सिद्धाश्रम पंचांग के अनुसार कार्तिक शुक्ल पंचमी शुक्रवार को 'सौभाग्य प्राप्ति जयन्ती' है, इस वर्ष यह ३-११-८९ को श्रेष्ठ पर्व आ रहा है, जो कि अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण प्रयोग है।

सौभाग्य प्राप्ति प्रयोग को संसार का दुर्लभ प्रयोग कहा जाता है, क्योंकि केवल मात्र इसी प्रयोग से व्यक्ति अपने जीवन का दुर्भाग्य मिटा सकता है, यह दुर्भाग्य पांच कारणों से बनता है।

१- पूर्व जन्म के पापों की वजह से,
२- अशुभ ग्रहों या पाप ग्रहों के फलस्वरूप,
३- पितृ दोष की वजह से,
४- किसी के द्वारा तांत्रिक प्रयोग कर दिये जाने के फलस्वरूप
५- अपने कर्मों की वजह से,

दुर्भाग्य की वजह से व्यक्ति अपने जीवन में उन्नति नहीं कर पाता, वह परिश्रम तो पूरा करता है, परन्तु उसे अपने जीवन में सुख नहीं मिलता, दुर्भाग्य की वजह से उसे निरन्तर आर्थिक हानि होती रहती है, न तो व्यापार में वृद्धि होती है, और न धन संचय होता है, इस दुर्भाग्य की वजह से बराबर ऋण बना रहता है। दुर्भाग्य की वजह से ही व्यक्ति रोग ग्रस्त बीमार और अशक्त तो रहता ही है, साथ ही साथ उसे परिवार में भी किसी प्रकार का सुख नहीं मिलता, चारों तरफ से परेशानियां उसे घेरे रहती है, वह एक परेशानी को मिटाता है, तो दूसरी स्वतः उपस्थित हो जाती है, इसके अलावा उसे शत्रु भय, और राज्य भय बराबर बना रहता है।

यही दुर्भाग्य स्त्रियों के लिए भी दुखदायक होता है,

दुर्भाग्य की वजह से स्त्री को अपने पीहर में या ससुराल में सुख नहीं मिलता, उसे पति का सुख नहीं मिलता, पति दूसरी स्त्री में अनुरक्त हो जाता है, जिसकी वजह से उसे पत्नी के रूप में जो सुख मिलना चाहिए वह नहीं मिल पाता, स्वास्थ्य बराबर कमजोर बना रहता है, और उसे नित्य नई व्याधियां और तनाव प्राप्त होता रहता है, दुर्भाग्य की वजह से ही स्त्री को विधवा जीवन व्यतीत करने के लिए मजबूर होना पड़ता है।

इन्हीं सब तथ्यों को ध्यान में रख कर हमारे शास्त्रों में सौभाग्य प्रयोग सम्पन्न करने का उपक्रम रखा, और वह विधि ढूंढ़ निकाली जिसकी वजह से दुर्भाग्य की काली छाया पुरूष या स्त्री के जीवन पर न पड़े, उसके सभी पाप और दोष इस प्रयोग से समाप्त हो सके, वह जीवन में पूर्ण अनुकूलता प्राप्त कर सके।

मेरे जीवन में यह अनुभव आया है, कि जो व्यक्ति पूरे वर्ष में एक बार इस अवसर पर सौभाग्य प्राप्ति प्रयोग को भली प्रकार से सम्पन्न कर लेता है, उसका पूरा वर्ष अपने आपमें ही सुखदायक और सौभाग्यशाली बना रहता है, उसके सारे ऋण समाप्त हो जाते है, आश्चर्यजनक रूप से आर्थिक उन्नति होने लगती है, और वह पूर्ण स्वास्थ्य लाभ कर जीवन में निरन्तर उन्नति करता रहता है।

यह मेरे जीवन का अनुभव रहा है, कि वास्तव में ही हमारे ऋषि मुनी श्रेष्ठ विद्वान थे, और उन्होने जिस विधि को ढूंढ़ निकला है, वह अपने आपमें ही आश्चर्यजनक है। इस प्रयोग को सम्पन्न करते ही, आश्चर्यजनक अनुभव होने लगते है, और वह सभी दृष्टियों से उन्नति करता हुआ पूर्ण सुखी और सौभाग्य प्राप्त कर लेता है।

सौभाग्य प्राप्ति प्रयोग

यह प्रयोग वर्ष में केवल एक बार इसी दिन सम्पन्न किया जा सकता है, और मेरी राय में घर के प्रत्येक सदस्य को यह प्रयोग सम्पन्न करना चाहिए। यों तो शास्त्रों में यह लिखा है, कि घर के मुखिया को यह प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए जिससे कि उसके जीवन में सभी दृष्टियों से अनुकूलता प्राप्त हो सके। ज्यादा अच्छा यह होगा कि पति या घर की पत्नी यह प्रयोग सम्पन्न करे, जिससे उसका सुहाग रह सके, और उसके जीवन में सभी दृष्टियों से सुख और सौभाग्य प्राप्त हो सके, उसे अपने पति का, अपने पुत्र और पुत्रियों का सुख मिल सके, उसकी पुत्रियों के शीघ्र विवाह सम्पन्न हो सके और वह अपने जीवन में जो कुछ चाहें वह प्राप्त कर सके।

आसान प्रयोग

यह प्रयोग अत्यन्त आसान है, और इसमें कोई जटिल विधि विधान नहीं है, इसलिए कम पढ़ा लिखा, साधक भी इस प्रयोग को सम्पन्न कर सकता है। इस प्रयोग को घर के मुखिया के अलावा जो भी अपने दुर्भाग्य को सौभाग्य में बदलने की इच्छा रखता है, जो भी अपने जीवन में पूर्ण उन्नति चाहता है, जो भी निरन्तर आगे बढ़ता हुआ पूर्ण सुख और सौभाग्य की इच्छा रखता है, उसे यह प्रयोग इस दिन अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, विद्यार्थियों के लिए तो यह प्रयोग अत्यन्त महत्वपूर्ण सफलतादायक और सौभाग्यवर्धक है।

अतिश्रवा उपनिषद में बताया गया है कि इस प्रकार का प्रयोग सम्पन्न करने से सभी प्रकार की पूर्ण शान्ति प्राप्त होती है और मानसिक तनाव समाप्त हो जाता है, ऐसे व्यक्ति के सभी रोग दूर हो जाते है, धन कीर्ति और आयु की वृद्धि होती है तथा उसके महापाप भी पूर्ण रूप से नष्ट हो जाते है, उसकी सारी आशाओं की पूर्ति होती है और यदि उस पर कितना ही भीषण तांत्रिक प्रयोग किया हुआ हो तो वह प्रयोग भी निश्चय ही समाप्त हो जाता है, यही नहीं अपितु उसके सारे मनोरथ और सारे उद्देश्य सिद्ध हो जाते है, उसे तीर्थो में जाने का पूर्ण फल

मिल जाता है, भूत प्रेत डाकनियों का भय नष्ट हो जाता है, तथा तेज एवं बल की वृद्धि होती है।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में महत्वपूर्ण है, यह भले ही सामान्य दिखाई दे, परन्तु इसका फल अपने आप में अचूक होता है, जिस प्रकार से एक छोटा सा अंकुश विशाल डीलडौल वाले हाथी को नियन्त्रण में कर लेता है, उसी प्रकार से यह छोटा सा प्रयोग सभी प्रकार के दुर्भाग्य को समाप्त कर सौभाग्य में परिवर्तित करने की क्षमता रखता है।

साधना प्रयोग

साधक इस दिन प्रातःकाल उठ कर यह निश्चय करे कि मैं आज सौभाग्य प्राप्ति प्रयोग सम्पन्न करूंगा, इसके लिए वह स्नान कर शुद्ध वस्त्र धारण कर ले, यदि स्त्री इस साधना प्रयोग को सम्पन्न करना चाहती है, तो वह प्रातः काल उठकर अपना सिर धो ले और बाल खुले रखे।

इसके बाद साधक आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाय उसके लिए यह आवश्यक नहीं है, कि साधक पीली धोती ही धारण करे। वह सफेद धोती पहिन सकता है, इसी प्रकार स्त्री साधिका भी किसी प्रकार के वस्त्र धारण कर यह प्रयोग सम्पन्न कर सकती है।

इसके बाद साधक सामने लकड़ी का बाजोट या तख्ता रख कर उस पर रेशमी सफेद वस्त्र बिछा दे, और उसके मध्य में चावलों की ढेरी बना दे, फिर चावल की ढेरी पर तांबे का मिट्टी का या पीतल का छोटा सा कलश स्थापन करे, और इस कलश पर केसर से त्रिकोण बनावे, फिर इस कलश में जल डाले. यदि घर में गंगा-जल हो तो थोड़ा सा गंगा जल भी डाले, इसके बाद कलश में अक्षत, सुपारी और थोड़े से पुष्प डाल दे तथा कलश के मुंह पर पांच पीपल के या आम के पत्ते रख दे, यदि इस प्रकार के पत्ते न मिले तो किसी भी प्रकार के पांच पत्ते रख कर उसके ऊपर नारियल रख दे।

इसके बाद कलश पर अबीर गुलाल चढ़ा कर निम्न मंत्र का उच्चारण करे।

ॐ उत्तिष्ठ ब्रह्म-कलश ! देवताभीष्ट-सिद्धिदः । सर्व तीर्थाम्बु-पूर्णेन पूरयास्य मनोरथम् । हं क्लीं लं ह्रीं ।

इस प्रकार से मंत्रोच्चारण करने के बाद सामने गुरू का चित्र स्थापित करे और गुरू का पूजन करे।

इसके बाद साधक सामने घी का दीपक लगावे और अगरबत्ती जलावे तथा सामने किसी पात्र में 'सौभाग्य प्राप्ति यंत्र' को स्थापित कर दे। यह यंत्र अपने आपमें अत्यन्त मंत्र सिद्ध होता है, और इस पर पूर्ण ज्ञानाभिषेक, और पूर्णाभिषेक सम्पन्न कर प्राण प्रतिष्ठा युक्त बनाया जाता है, जिसकी वजह से यह, यंत्र मंत्र सिद्ध और अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है।

इसके बाद साधक स्फटिक माला से इस कलश के सामने ग्यारह माला मंत्र जप करे, इस प्रकार मंत्र जप में में ज्यादा से ज्यादा दो घण्टे का समय लगता है।

मंत्र

ॐ ऐं ऐं श्रीं ह्रीं ह्रीं

मन्त्र सम्पन्न करने के बाद साधक निम्न प्रकार का यन्त्र कलश पर केसर से अंकित करे, यह अंकन किसी तिनके से या चांदी की सलाका से बनाया जा सकता है। इस यंत्र को "सौभाग्य यंत्र" कहते है। फिर इस यंत्र का अंकन कलश पर करके उसकी पूजा करे. और निम्न मंत्र जप स्फटिक माला से ही करे।

यंत्र अंकन

१	२	५
३	७	६

द्वितीय मंत्र

ऐं ह्रीं ऐं

इसके बाद साधक जो सामने पात्र में सौभाग्य यंत्र रखा है, उस यन्त्र पर " ह्रीं " अक्षर केसर से अंकित करें, और उसकी संक्षिप्त पूजा करें, संक्षिप्त पूजा से तात्पर्य यन्त्र पर चावल चढ़ावे, पुष्प समर्पित करें, और भोग लगावे, इससे संक्षिप्त पूजा सम्पन्न हो जाती है।

इसके बाद साधक निम्न मंत्र की तीन माला मंत्र जाप करे —

तृतीय मन्त्र

ॐ ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ ॐ

ऐसा करने पर यह साधना प्रयोग सम्पन्न हो जाता है, तब साधक उस यन्त्र को अपने गले में धारण कर ले, गले में पहनने के लिए साधक इस यन्त्र में लाल या पीला धागा पिरो दे, अथवा सोने या चांदी की चैन पिरो कर भी गले में धारण कर सकता है।

शास्त्रों में वर्णित है, कि साधक पूरे वर्ष भर इस यन्त्र को अपने गले में पहने रहे, पर यदि ऐसा संभव न हो तो जिस दिन यह साधना सम्पन्न करें, उससे अगले एक महीने तक तो अवश्य ही यह यंत्र गले में पहने रहे, इसके बाद इस यन्त्र को उतार कर अपने पूजा स्थान में रख सकते हैं।

वास्तव में ही यह प्रयोग अपने आप में महत्वपूर्ण है, उससे भी ज्यादा वह 'यंत्र' महत्वपूर्ण है, जो 'महाचिनाचार सार तन्त्र' से अभिषेक युक्त और शक्ति संगम तंत्र के अनुसार प्रभावयुक्त बनाया हुआ होता है, जिकी वजह से इसका प्रभाव तुरन्त ही प्राप्त होने लगता है।

वास्तव में ही वे साधक और साधिकाएं धन्य हैं जो इस प्रकार के अवसर का लाभ उठा कर यह साधना सम्पन्न करते हैं, और अपने जीवन में सभी समस्याओं को समाप्त कर पूर्णता प्राप्त करते हैं। ●

शनि स्तोत्र

यह प्रयोग महत्वपूर्ण है, जिनकी जन्मकुण्डली में शनि ग्रह बाधक हो, या शनि की दशा चल रही हो, अथवा शनि की साढ़े सती या ढय्या चल रहा हो अथवा शनि की वजह से कोई बाधा हो तो प्रातःकाल उठकर शनि के हिन्दी में या संस्कृत में इन दस नामों को 'शनि मुद्रिका' धारण कर पढता है, तो उसे किसी प्रकार की कोई बाधा या तकलीफ नहीं आती।

शनि के ये दस नाम हैं- १) कोणस्थ, २) पिंगल, ३) बभ्रु, ४)कृष्ण, ५) रौद्र, ६) अन्तक, ७) यम, ८)सौरि ९) शनिश्चर, १०) मन्द।

कोणस्थ पिंगलो बभ्रुः कृष्णो रौद्रान्तको यमः
सौरिः शनिश्चरो मन्दः पिप्पलादेन संस्तुतः ॥
एतानि दश नामानि प्रातः रूत्थाय यः पठेत्
शनिश्चर-कृत-पीड़ः न कदाचिद् भविष्यति ॥

शनि भार्या स्तोत्र

इसी प्रकार पिप्पलाद ऋषि ने शनि भार्या स्तोत्र का एक बार उच्चारण प्रातःकाल करने की सलाह है-

ध्वजिनि धामिनी चैव कंकाली कलह-प्रिया
कलही कंटकी चापि अजा महिषी तुरंगमा ।
नामानि शनि-भार्यायाः नित्यं जपति यः पुमान्
तस्य दुखानि नश्यन्ति सुखं सौभाग्य मेधते ॥

अर्थात् शनि से पीड़ित व्यक्ति को प्रातःकाल उठ कर शनि के दस नामों के साथ साथ शनि पत्नी के भी निम्न दस नामों का उच्चारण करना चाहिए- १- ध्वजिनी, २- धामिनी, ३- कंकाली, ४- कलह-प्रिया, ५- कलही, ६- कंटकी, ७- अजा, ८- महिषी ९- तुरंगमा, १०- चापि। ★

शत्रु संहार की श्रेष्ठतम विधि

काल भैरव साधना प्रयोग

(२०-११-८९)

मार्ग शीर्ष कृष्ण ८ को काल भैरव अष्टमी दिवस है, और यह अपने आपमें अत्यन्त महत्वपूर्ण दिवस माना जाता है, क्योंकि प्रत्येक तांत्रिक ग्रन्थों में काल भैरव को जीवन की पूर्णता का पर्याय माना है।

उच्चकोटि के तांत्रिक ग्रन्थों में बताया गया है, कि चाहे किसी भी देवी या देवता की साधना की जाय सर्व प्रथम गणपति और काल भैरव की पूजा आवश्यक है। जिस प्रकार से गणपति समस्त विघ्नों का नाश करने वाले हैं, ठीक उसी प्रकार से भैरव समस्त प्रकार के शत्रुओं का नाश करने में पूर्ण रूप से सहायक है।

कलियुग में बगला मुखी, छिन्नमस्ता, या अन्य महादेवियों की साधनाएं तो कठिन प्रतीत होने लगी है, यद्यपि ये साधनाएं शत्रु संहार के लिए पूर्ण रूप से समर्थ और बलशाली है, परन्तु 'काल भैरव साधना' कलि-युग में तुरन्त फलदायक और शीघ्र सफलता देने में सहायक है। अन्य साधनाओं में तो साधक को फल जल्दी या विलम्ब से प्राप्त हो सकता है, परन्तु इस साधना का फल तो हाथों हाथ मिलता है, इसीलिए कलियुग में गणपति, चण्डी और भैरव की साधना तुरन्त रूप से महत्वपूर्ण मानी गई है।

प्राचीन समय से शास्त्रों में यह प्रमाण बना रहा है, कि किसी भी प्रकार का यज्ञ कार्य हो तो यज्ञ की रक्षा के लिए भैरव की स्थापना और पूजा सर्व प्रथम आवश्यक है, किसी भी प्रकार की पूजा हो उसमें सबसे पहले गण-पति की स्थापना की जाती है, तो साथ ही साथ भैरव की उपस्थिति और भैरव की साधना भी जरूरी मानी गई है क्योंकि ऐसा करने से दसों दिशाएं आबद्ध हो जाती है, और उस साधना में साधक को किसी भी प्रकार का भय व्याप्त नहीं होता और न किसी प्रकार का उपद्रव या बाधाएं आती है, ऐसा करने पर साधक को निश्चय ही पूर्ण सफलता प्राप्त हो जाती है।

इसके अलावा भैरव की स्वयं साधना भी अत्यन्त महत्वपूर्ण और आवश्यक मानी गई है, आज का जीवन जरूरत से ज्यादा जटिल और दुर्बोध बन गया है, पग पग पर कठिनाइयां और बाधाएं आने लगी है, अकारण ही शत्रु पैदा होने लगे है, और उनका प्रयत्न यही रहता है कि येन-केन प्रकारेण लोगों को तकलीफ दी जाय या उन्हें परेशान किया जाय, इससे जीवन में जरूरत से ज्यादा तनाव बना रहता है।

इसीलिए आज के युग में अन्य सभी साधनाओं की अपेक्षा भैरव की साधना को ज्यादा महत्व दिया जाने लगा है।

'देव्योपनिषद' में भैरव साधना क्यों की जानी चाहिए, इसके बारे में विस्तार से विवरण है, उनका सारा मूल तथ्य निम्न प्रकार से है-

१– जीवन के समस्त प्रकार के उपद्रवों को समाप्त करने लिए।

२– जीवन की बाधाएं और परेशानियों को दूर करने के लिए।

३– जीवन के नित्य कष्टों और मानसिक तनावों को समाप्त करने के लिए।

४– शरीर स्थित रोगों को निश्चित रूप से दूर करने लिए।

५– आने वाली बाधाओं और विपत्तियों को पहले से ही हटाने के लिए।

६– जीवन के और समाज के शत्रुओं को समाप्त करने और उनसे बचाव के लिए।

७– शत्रुओं की बुद्धि भ्रष्ट करने के लिए और शत्रुओं को परेशानी में डालने के लिए।

८– जीवन में समस्त प्रकार के ऋण और कर्जो की समाप्ति के लिए।

९– राज्य से आने वाली बाधाओं या अकारण भय से मुक्ति के लिए।

१०– जेल से छूटने के लिए और मुकदमों में शत्रुओ को पूर्ण रूप से परास्त करने के लिए।

११– चोर भय, दुष्ट भय, और वृद्धावस्था से बचने के लिए।

१२– समस्त प्रकार के उपद्रवों से रक्षा के लिए।

इसके अलावा हमारी अकाल मृत्यु न हो, या किसी प्रकार का एक्सीडेन्ट न हो अथवा हमारे बालकों की अल्प आयु में मृत्यु न हो, आदि के लिए भी "काल भैरव साधना" अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है। इसीलिए तो शास्त्रों में कहा गया हैं, कि जो चतुर और बुद्धिमान व्यक्ति होते है, वे अपने जीवन में काल भैरव साधना अवश्य ही करते है. जो वास्तव में ही जीवन में बिना बाधाओं के निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होना चाहते है, वे काल भैरव साधना अवश्य करते है। जो अपने जीवन में यह चाहते है, कि किसी भी प्रकार से राज्य की कोई बाधा या परेशानी न आवे वे निश्चय ही भैरव साधना सम्पन्न करते है। जिन्हें अपने बच्चे प्रिय है, जो अपने जीवन में रोग नहीं चाहते, जो अपने पास बुढ़ापा फट-कने नहीं देना चाहते, वे अवश्य ही काल भैरव साधना सम्पन्न करते है।

उच्च कोटि के योगी, सन्यासी तो काल भैरव साधना करते ही है, जो श्रेष्ठ बिजनेस मेन या व्यापारी है, वे भी अपने पण्डितों से काल भैरव साधना सम्पन्न करवाते है। जो राजनीति में रुचि रखते है, और अपने शत्रुओं पर

विजय पाना चाहते है, वे भी अपने विश्वस्त तांत्रिकों से काल भैरव साधना सम्पन्न करवाते है। मेरा यह अनुभव रहा है, कि जीवन में सफलता और पूर्णता पाने के लिए काल भैरव साधना अत्यन्त आवश्यक और महत्वपूर्ण है।

सरल साधना

नाम भले ही डरावना और तीक्ष्ण हो, परन्तु काल भैरव अत्यन्त सौम्य और रक्षा करने वाले देवता है। जिस प्रकार से हमारे बॉड़ी गार्ड लम्बे डील डौल वाले भयानक और बन्दूक या शस्त्र साथ में रख कर चलने वाले होते है, पर उससे हमें भय नही लगता अपितु उनकी वजह से उलटे हम निश्चिंत हो जाते है, उसी प्रकार से काल भैरव भी हमारे जीवन के बॉडी गार्ड की तरह है, वे हमें किसी प्रकार से तकलीफ नहीं देते अपितु हमारी रक्षा करते है, है, और हमारे लिये अनुकूल स्थितियां पैदा करते हैं।

यह साधना सरल और सौम्य साधना है, किसी प्रकार की देवी देवता की साधना करने वाला, गायत्री साधना करने वाला, या देवी शिव या विष्णु की साधना करने वाला व्यक्ति भी काल भैरव साधना कर सकता है। दूसरे शब्दों में इस प्रकार के साधकों को भैरव साधना अवश्य ही करनी चाहिए। शास्त्रों में स्पष्ट रूप से बताया गया है. कि काल भैरव साधना अथवा भैरव साधना कोई भी पुरूष या स्त्री सम्पन्न कर सकती है, यदि कोई सुहागिन स्त्री इस भैरव साधना को करती है तो उसके सौभाग्य की तथा सुहाग की रक्षा होती है तथा उसके बालकों को किसी प्रकार की कोई तकलींफ नहीं होती, उन बालकों की अकाल मृत्यु नहीं होती और उन घर में किसी प्रकार की परेशानी आती है।

इसके अतिरिक्त यह साधना आसान और सरल साधना है, यदि इस साधना में असफलता भी मिल जाती है, या यह साधना भली प्रकार से सम्पन्न न हो अथवा साधना में किसी प्रकार की त्रुटि रह जाय तब भी किसी प्रकार की बाधा नही आती और न किसी प्रकार का विपरीत प्रभाव देखने को मिलता है।

साधना प्रयोग

यों तो शास्त्रों में ५२ भैरव बताये गये है, और उन सब की साधनाएं अलग अलग तरीके से दी हुई है। मैं यहां पर उन ५२ भैरवों में प्रमुख काल भैरव साधना को स्पष्ट कर रहा हूं, जिसके सम्पन्न करने से जो फल प्राप्त होते हैं, उन्हें मैंने पीछे के पृष्ठों में स्पष्ट किया है।

साधक काल भैरव अष्टमी के दिन (जो कि इस वर्ष २०-११-८९ को आ रही है) स्नान कर लाल धोती धारण कर ले। यदि सर्दी की ऋतु हो तो कन्धों पर भी लाल धोती डाल सकते है, या लाल कम्बल ओढ़ सकते हैं, इसी प्रकार स्त्री साधिका लाल साड़ी धारण कर सकती है।

फिर साधक लाल आसन बिछा कर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय, और सामने लकड़ी का एक बाजोट रख दें, उस पर लाल वस्त्र बिछा दें और उस बाजोट पर स्टील या लोहे की थाली रख दें, फिर इस थाली के मध्य में कुंकुम से या ज्यादा अच्छा यह हो कि सिन्दूर से अपनी उंगली या तिनके से "ॐ भं भैरवाय नमः" लिख दें, फिर इस थाली के मध्य में "काल-भैरव यन्त्र" को स्थापित कर दें।

"काल भैरव यन्त्र" अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण और दुर्लभ यन्त्र माना गया है, यह तांबे का या लोहे का बना होना चाहिए. इस यन्त्र का निर्माण स्टील पर भी किया जा सकता है, फिर इस यन्त्र में प्राण प्रतिष्ठा की हुई हो, और पूर्ण रूप से नीलकण्ठ प्रयोग, काल प्रयोग, विक्रम प्रयोग तथा मृत्युदर्पनाशन प्रयोग सम्पन्न कर इसे प्रभावयुक्त बनाना चाहिए।

देवी उपनिषद में बताया गया है, कि महत्वपूर्ण काल भैरव यन्त्र को बनाने के लिए उसका निर्माण पूर्ण विधि

के साथ सम्पन्न हो, फिर उस यन्त्र पर निम्न १२ प्रयोग संपन्न किये जांय, जिससे कि वह महायन्त्र घर में रखने से ही अनुकूलता एवं सुफल प्रदान कर सके, देवी उपनिषद के अनुसार उस यन्त्र पर निम्न १२ प्रयोग कर पूजन करना चाहिए —

१– काल भैरव प्रयोग
२– नील कण्ठ प्रयोग
३– तीक्ष्णदंष्ट्रकाल भैरव प्रयोग
४– दण्डपाण्य प्रयोग
५– विक्रम प्रयोग
६– स्वर्ण सिद्धि प्रयोग
७– मृत्यु दर्पनाशन प्रयोग
८– शत्रु स्तम्भन प्रयोग
९– कर्म पाश मोचक प्रयोग
१०– अष्ट सिद्धि प्रयोग
११– ऋण मोचक प्रयोग
१२– अकाल मृत्यु निवारक प्रयोग

उपरोक्त १२ प्रयोग किसी श्रेष्ठ पंडित से उस यंत्र पर सम्पन्न करा देने चाहिए , जिससे कि वह यंत्र अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावदायक बन सके ।

इस प्रकार के प्रयोग अत्यन्त जटिल और विधि विधान युक्त होते है, और इनमें से कई विधियां तो मेरी राय में अब तक सर्वथा गोपनीय रही है। फिर भी इस प्रकार की विधियों को ढूंढ़ कर इस यंत्र पर ये सारी विधियां सम्पन्न करने से वह यंत्र अपने आपमें शीघ्र एव पूर्ण सफलतादायक बनता है।

इसके बाद उस यंत्र की प्राण प्रतिष्ठा होनी चाहिए और ऐसा प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'कालभैरव महा यंत्र' अपने आप में ही दुर्लभ, महत्वपूर्ण तथा सोने की खान के समान हो जाता है, जिसके घर में इस 'शिष्य वर्ष' में इस प्रकार का महायंत्र होता है, वास्तव में ही वह व्यक्ति सौभाग्यशाली होता है, और वह अपने जीवन में बिना किसी अड़चनों या बाधाओं के अपनी मंजिल तक पहुंचने में सक्षम हो पाता है।

साधकों के लिये पत्रिका कार्यालय में इस "शिष्य वर्ष" में ऐसे ही महायंत्र तैयार करवाये गये है, जो कि संख्या में कम ही तैयार हो पाये हैं, परन्तु हमने जो भी 'महायंत्र' तैयार करवाये हैं, वे अपने आप में ही पूर्ण प्रभाव दायक और उपरोक्त द्वादश प्रयोगो से सम्पन्न फलदायक है ।

ऐसा महायंत्र उस थाली में स्थापित कर के, उस यंत्र पर सिन्दूर की ५२ बिन्दियां लगावे, जो कि ५२ भैरव की प्रतीक होती है, फिर उस पर लाल पुष्प चढ़ावे, और चावलों को सिन्दूर में रंग कर भैरव पर चढ़ावे, इस प्रकार का पूजन कार्य करते समय "ॐ भं भैरवाय नमः" मन्त्र का उच्चारण करता रहे।

इस प्रकार संक्षिप्त पूजा सम्पन्न करने के बाद भैरव के सामने एक कटोरी में घी और गुड़ मिला कर भोग लगावे और तेल का दीपक जला दे, फिर उसके सामने निम्न स्तोत्र मन्त्र का ५१ बार पाठ करे, यह अपने आप में स्तोत्र होते हुए भी मन्त्र के समान प्रभावदायक है, इसीलिए इसको स्तोत्र मन्त्र' कहा गया है, इसमें हकीक माला का या मूंगे की माला का प्रयोग किया जा सकताहै।

भैरव स्तोत्र

यं यं यं यक्षरूपं दश दिशि विदितं भूमिकम्पायमानं।
सं सं संहारमूर्ति शिर मुकुट जटाशेखरं चन्द्रबिम्बम्।।
दं दं दं दीर्घकायं विकृत नख मुखं उर्ध्वरोयं करालं।
पं पं पं पापनाशं प्रणमत सततं भैरवं क्षेत्रपालम्।।

उपरोक्त स्तोत्र मन्त्र का ५१ बार पाठ करने के बाद साधक आसन से उठ जाय, पर भैरव के सामने जो भोग लगा हुआ है वह रहने दे और तेल का दीपक बराबर जलते रहना चाहिए।

इसी दिन रात्रि को लगभग ९ बजे के बाद वह भोग जहां तीन रास्ते मिलते हो, वहां ले जाकर रख दे और वह दीपक भी वहीं पर रख दें, यदि दीपक ले जाते समय मार्ग में बुझ जाय तो वहां तीन रास्तों पर वह दीपक रख कर पुनः माचिस से जला सकते है और फिर लौट कर आ जाय, दीपक और भोग रखने के बाद पीछे मुड़ कर नहीं देखे और घर में आ कर स्नान कर कपड़े बदल ले।

इस प्रकार यह प्रयोग सम्पन्न होता है, उस "काल भैरव महायंत्र" को घर में किसी भी स्थान पर रख सकते है, वह महायंत्र निश्चय ही घर की, व्यापार की, शरीर की, परिवार की और बाल बच्चों की सभी दृष्टियों से पूर्ण रक्षा करता हैं।

अन्धों को ज्योति प्रदान करने वाला

सूर्य सिद्धि प्रयोग

(४-११-८९)

तांत्रिक ग्रन्थों में कुछ ऐसी विशिष्ट साधनाएं है, जो अपने आपमें अद्वितीय कहीं जा सकती है। उन ऋषियों ने अपने ज्ञान से ऐसे मंत्र और ऐसी साधनाएं ढूंढ़ निकाली, जो मानव जाति के कल्याण के लिए है।

कार्तिक शुक्ल ६ को 'सूर्य सिद्धि दिवस' पूरे भारतवर्ष में मनाया जाता हैं, इस वर्ष यह दिवस ४-११-८९ को सम्पन्न हो रहा है। पूरे वर्ष में यह एक मात्र दिवस है, जब साधक भगवान सूर्य की आराधना कर अपने नेत्रों की ज्योति प्राप्त करता है, और अपने जीवन के अन्धकार को प्रकाश में बदलने का प्रयत्न करता है।

"शतानिक उपनिषद" में एक अत्यन्त तेजस्वी और दुर्लभ प्रयोग दिया है, जो कि भगवान सूर्य से संबंधित है। कलियुग में सूर्य और अग्नि प्रत्यक्ष देवता है, हमारे वेदों में जिन देवताओं की गणना की गई है, उनमें से अन्य देवता तो हमें दिखाई दे या न दें, अथवा साधना सम्पन्न करने पर उनके दर्शन न हो सकें परन्तु भगवान सूर्य और अग्नि तो प्रत्यक्ष देवता है, और कलियुग में भी साधक जब चाहे, इन देवताओं के दर्शन कर सकता है।

यों तो मानव शरीर व्याधियों और बीमारियों का घर है, परन्तु इनमें सबसे अधिक दुःखदायी अन्धापन है। जब व्यक्ति की नेत्र ज्योति क्षीण हो जाती है, या उसे दिखाई नहीं देता, तो उसे पग-पग पर ठोकरे खानी पड़ती हैं, उसे दूसरों के आश्रित रहना पड़ता है, छोटे से

छोटे काम के लिए लोगों का मोहताज होना पड़ता है, न तो वह प्रकृति और दुनियां की सुन्दरता को देख सकता है, और न वह ऐश आराम भोग-विलास चित्रपट दृश्य आदि का आनन्द ले सकता है, सही अर्थों में कहा जाय तो उसका पूरा जीवन अन्धकार में डूबा हुआ होता है, उसे जीवन से किसी प्रकार का कोई रस नहीं रहता, उसे अपने दैनिक कार्यों और आवश्यक कार्यों के लिए भी दूसरों की सहायता लेनी पड़ती है।

यह अन्धापन कई कारणों से व्याप्त हो जाता है, जिन में निम्न पांच कारण प्रमुख है -

१- किसी विशेष बीमारी की वजह से आंखों की रोशनी समाप्त हो जाती है।

२- वृद्धावस्था के कारण जब शरीर शिथिल हो जाता है, तब व्यक्ति को कम दिखाई देने लगता है, या बिल्कुल दिखाई नहीं देता।

३- आकस्मिक दुर्घटना आदि की वजह से भी नेत्रों की ज्योति समाप्त हो सकती है।

४- गलत दवा का उपयोग करने से या गलत आपरेशन होने से देवी प्रकोप से अथवा दुर्घटना से भी आंखों की ज्योति समाप्त हो सकती है।

५- रतौंधी, मोतिया बिन्द, फूला, आदि अन्य आँखों की बीमारियों से भी नेत्र ज्योति कमजोर हो जाती है और व्यक्ति को मजबूरन अन्धता का शिकार होना पड़ता है।

इसमें कोई दो राय नहीं कि आज विज्ञान बहुत आगे बढ़ गया है, और आंखों के अच्छे से अच्छे आपरेशन होने लगे है, परन्तु फिर भी विज्ञान इस दुनियां से अन्धता को समाप्त नहीं कर सका है। आज भी करोड़ों व्यक्ति अन्धेपन के शिकार है. और वे एक प्रकार से देखा जाय तो हमारी दुनियां से कटे हुए है।

हमारे महाऋषियों को इन तथ्यों का बहुत समय पहले से ही ज्ञान था, और उन्होंने अन्धता को 'मृत्यु' ही कहा है। मृत्यु होने पर तो आदमी एक बार हो समस्त दुखों से मुक्त हो जाता है, परन्तु अन्धे व्यक्ति को तो रोज मरना पड़ता है, इसीलिए उन्होंने कुछ ऐसी विधियां ढूंढ निकाली जिसकी वजह से यह अन्धता समाप्त हो सके।

सिद्धाश्रम के योगियों ने भी इस तथ्य की ओर पूरा ध्यान दिया, काफी वर्षों से वे इस प्रयत्न में थे, कि कोई ऐसी विधि या कोई ऐसा उपाय ढूंढ निकाला जाय जिसकी वजह से लोगों का अन्धापन समाप्त हो सके और वे वापिस रोशनी प्राप्त कर सके। वे वापिस दुनिया का यहां के राग-रंग का आनन्द ले सके, वे दूसरों के आश्रित नहीं रहे, और उन्हें दैनिक कार्यों के लिए किसी का मोहताज न होना पड़े।

यद्यपि पत्रिका के पिछले अंकों में हमने चाक्षुषोपनिषद की चर्चा की थी और एक प्रयोग दिया था, जिसका वर्णन शास्त्रों में था, पाठकों ने उस प्रयोग से काफी लाभ उठाया, यह उनके नित्य आने वाले पत्रों से स्पष्ट है।

परन्तु जैसा कि मैंने अभी बताया कि जिस प्रकार से विज्ञान में निरन्तर खोज होती रहती है, और विज्ञान की प्रगति आगे बढ़ती रहती है, ठीक उसी प्रकार से ज्ञान के क्षेत्र में भी नित्य नवीन शोध होती रहती है, सिद्धाश्रम के उच्चकोटि के योगी बराबर इसी खोज में रहते है और वे उन विधियों को ढूंढते है, उनका परीक्षण करते है, और उनका प्रयोग कर उनकी सत्यता असत्यता का ज्ञान प्राप्त करते है, ऐसी ही नवीनतम शोध 'सूर्य साधना' है जो कि मूल रूप से तो शतानिक उपनिषद में वर्णित है परन्तु ऋषियों ने उस शतानिक उपनिषद में बताई हुई जटिल विधि को आसान किया, अपने ज्ञान और साधना के बल पर उसमें शोध किया, और वे विधियां, वे तथ्य और वे प्रयोग ढूंढ़ निकाले, जो आज के समय में ज्यादा उपयोगी है, ज्यादा सार्थक है और जिसका प्रयोग सामान्य साधक भी आसानी से कर सकता है।

इस साधना प्रयोग को किसी भी रविवार को किया जा सकता है, पर यदि अवसर और सुविधा मिले तो "सूर्य सिद्धि" दिवस के अवसर पर इस प्रयोग को प्रारम्भ करना चाहिए, इस प्रयोग को जो अन्धता का शिकार है, वह पुरूष या स्त्री सम्पन्न कर सकता है, यदि यह संभव न हो तो उसका पुत्र, पुत्री, या पुत्रवधू सम्पन्न कर सकती है, अथवा किसी योग्य पंडित अथवा ब्राह्मण से भी इस प्रयोग को सम्पन्न करवाया जा सकता है।

शतानिक उपनिषद में तो स्पष्ट रूप से बताया गया है, कि जो अन्धे है, या जिनकी नेत्र ज्योति क्षीण है, या जिन्हें आंखों की कोई बीमारी है, वे तो सूर्य सिद्धि दिवस के अवसर पर इस प्रयोग को प्रारम्भ करे ही, परन्तु जो सभी दृष्टियों से स्वस्थ है, उनको भी चाहिए कि वे इस दुर्लभ प्रयोग को इस अवसर पर सम्पन्न करे, जिससे कि भविष्य में उन्हें अन्धता का शिकार न होना पड़े। दुर्भाग्यवश किसी दुर्घटना में उनकी आंखों को कोई क्षति न पहुंचे और उन्हे आंखों से संबंधित किसी प्रकार की बीमारी न हो। सिद्धाश्रम के योगियों ने भी प्रत्येक साधक, पुरूष या स्त्री को सलाह दी है, कि वे सूर्य सिद्धि दिवस के अवसर पर अवश्य ही इस प्रयोग को सम्पन्न करे, जिससे कि मृत्यु तक उनकी आंखें स्वस्थ व सुन्दर रह सके, और वह अपने जीवन में इस दुनिया का पूरा पूरा आनन्द ले सके।

सिद्धाश्रम के योगी विश्रवा का तो यह कहना है, कि इस प्रयोग से केवल आंखों की ज्योति ही नहीं प्राप्त होती आखों से संबधित बीमारी ही नहीं समाप्त होती, अपितु जिस पुरुष या स्त्री की आंखें छोटी हो, अथवा असुन्दर हो, तो इस प्रयोग से उसकी आंखें हिरणी की तरह सुन्दर और आकर्षक बन जाती है, तथा उसकी सुन्दरता में चार चांद लग जाते हैं, इसलिए सौन्दर्य वृद्धि में भी यह प्रयोग आवश्यक एवं उपयोगी है।

साधना समय

साधना का तात्पर्य कोई जटिल विधि विधान या क्रिया नही है, जिस प्रकार से व्यक्ति अपने इलाज के लिए अस्पताल जाता है, वहां पर घण्टे दो घण्टे इन्तजार करना पड़ता है, ठीक उसी प्रकार से इसके लिए भी साधक को घण्टे दो घण्टे का समय निकालना पड़ता है, और जिस प्रकार से हम डाक्टर की सलाह के अनुसार औषधि लेते हैं, उसी प्रकार से योग्य व्यक्ति, गुरू की सलाह से साधना ज्ञान प्राप्त करते हैं, और उस साधना को सम्पन्न कर अपने जीवन में पूर्णता प्राप्त करते हैं।

इस साधना को किसी भी रविवार से प्रारंभ किया जा सकता है, पर यदि सुविधा हो तो "सूर्य सिद्धि दिवस" से इस साधना को प्रारम्भ करना चाहिए, इस वर्ष यह सूर्य सिद्धि दिवस ४-११-८९ को आ रहा है, यह साधना, दिन को ही सम्पन्न की जाती है, अतः साधकों को चाहिए कि वे प्रातः काल इस साधना को सम्पन्न करें।

शास्त्रों में सूर्य सिद्धि दिवस को इन्द्राक्षी प्रयोग कहा गया है, नीचे मैं इस एक दिन की साधना को स्पष्ट कर रहा हूं।

सूर्य सिद्धि हेतुः इन्द्राक्षी प्रयोग

प्रातः काल उठ कर साधक स्नान कर सफेद वस्त्र धारण कर ले, यदि स्त्री साधिका हो तो बालों को धो ले और बाल खुले रखे, उसके बाद सूर्य उगने पर साधक लोटे में जल ले कर पूर्व दिशा की ओर सूर्य के सामने खड़े हो कर भगवान सूर्य को अर्घ्य दे, अर्थात् लोटे से जल को सूर्य के सामने जमीन पर धार बांधते हुए छोड़े और उसके बाद जहां जल गिरा है, उसकी सात प्रदक्षिणा करे, तत्पश्चात् साधक अपने पूजा स्थान में या कमरे में आ कर आसन पर बैठ जाय, पूर्व दिशा की ओर मुंह करे, सफेद आसन बिछा हुआ हो और सामने किसी पात्र में 'सूर्य सिद्धि युक्त इन्द्राक्षी यंत्र' को स्थापित करे, यह धातु निर्मित मंत्र सिद्ध दुर्लभ यंत्र होता हैं जिसको स्पर्श करने से ही अनुकूल फल प्राप्त होने लगता है।

इस यंत्र को पहले से ही प्राप्त कर लेना चाहिए, इस

यंत्र का अंकन केवल रविवार को ही किया जाता है, और फिर चाक्षुषोपनिषद में वर्णित विधि से इसे मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त किया जाता है, जिसकी वजह से यह यंत्र अपने आपमें तेजस्वी और सिद्धिदायक बन जाता है, शास्त्रों में तो कहा गया है, कि जिसके घर में इस प्रकार का यंत्र रहता है, उसके घर में आंखों की बीमारी व्याप्त नहीं होती और भगवान सूर्य घर के सभी सदस्यों के आंखों की रक्षा करते है।

इस प्रकार के यंत्र को किसी थाली में रख कर कुंकुम से अक्षत और पुष्प से संक्षिप्त पूजा करे, और हाथ में जल ले कर निम्न प्रकार से विनियोग करे।

विनियोग

ॐ अस्य श्री इन्द्राक्षी-स्तोत्र-महा-मन्त्रस्य श्री शचि-पुरन्दर ऋषिः, अनुष्टुप छन्दः, श्रीइन्द्राक्षी दुर्गा देवता, महा-लक्ष्मीः बीजं, भुवनेश्वरी शक्तिः, भवानी कीलकं, मम श्रीइन्द्राक्षी-प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

विनियोग के बाद साधक या साधिका इस प्रकार के दुर्लभ यंत्र के सामने घी का दीपक लगा दे और दोनों हाथ जोड़ कर ध्यान करे।

ध्यान

नेत्राणां दशभिः शतै परिवृतां अत्युग्र-चर्माम्बराम्,
हेमाभां महतीं विलम्बित-शिखामायुक्त-केशान्वि-
ताम्।
घण्टा-मण्डित-पाद-पदम्-युगलां, नागेन्द्र - कुम्भ-
स्तनीम,
इन्द्राक्षी परिचिन्तयामि मनसा कल्पोक्त-सिद्धि-
प्रदाम्॥

नीचे मैं दुर्लभ इन्द्राक्षी मंत्र को स्पष्ट कर रहा हूँ, जो कि आंखों की रक्षा के लिए और नेत्र ज्योति प्रदान करने के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है।

इन्द्राक्षी मन्त्र

ॐ नमो भगवति, माहेश्वरि, महा-चिन्तामणि, सकल - सिद्धेश्वरि, सकल-जन-मनोहारिणि, काल-रात्रि, अनले, अजिते, अभये, महा-घोर-प्रति-हत-विश्व-रूपिणि, मधु-सूदनि, महा-विष्णु-स्वरूपिणि, नेत्र-शूल-कर्ण-शूल-कटि-शूल-पक्ष-शूल-पाण्डु-रोगादीन् नाशय नाशय। वैष्णवि! ब्रह्मास्त्रेण विष्णु चक्रेण रुद्र-शूलेन यम-दण्डेन वरुण-पाशेन वासव-वज्रेण सर्वान् अरीन् भजय भजय यक्ष ग्रह राक्षस-ग्रह स्कन्द ग्रह-विनायक-ग्रह-बालग्रह-चोर-ग्रह-कूष्माण्ड-ग्रहादीन् निग्रह निग्रह, राज-यक्ष्म-क्षय-रोग-ताप-ज्वर-निवारिणि! मम सर्व-ज्वरं नाशय, सर्व-ग्रहान् उच्चाटय उच्चाटय, हुं फट् स्वाहा।

उपरोक्त सामान्य मंत्र ही नहीं है, अपितु सही शब्दों में कहा जाय तो यह मंत्रराज है, इसका इस साधना में ५१ बार पाठ करना चाहिए, ऐसा करने पर यह साधना सिद्ध हो जाती है।

यदि कोई साधक इस प्रकार से न कर सके तो नित्य इस मन्त्र का एक बार पाठ करे, तब भी कुछ ही दिनों में उसे आश्चर्यजनक फल प्राप्त होने लगता है, उसकी खोई हुइ रोशनी पुनः प्राप्त हो जाती है।

साधकों को चाहिए कि वे ऐसे दुर्लभ इन्द्राक्षी यंत्र के सामने यह प्रयोग सम्पन्न कर अनुभव करे, कि यह कितना श्रेष्ठ प्रयोग हैं, आप अपने अन्धे माता-पिता के लिए या किसी के भी लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर सकते है, और वास्तव में ही जिनकी नेत्र ज्योति कमजोर हो आप उनको इस यंत्र के बारे में इस मंत्र के बारे में जानकारी दे कर समाजोपयोगी कार्य कर सकते है।

वायु गमन एवं अदृश्य सिद्धि हेतु

दुर्लभ

छिन्नमस्ता साधना

(१३-११-८६)

दस महाविद्याओं में छिन्न मस्ता साधना को सर्वाधिक प्रमुखता दी गई है। ये दस महाविद्या साधनाएं हैं- १-महाकाली, १-तारा, ३-षोडसी त्रिपुर सुन्दरी, ४-भुवनेश्वरी, ५- त्रिपुर भैरवी, ६- धूमावती, ७- बगला मुखी; ८- मातंगी ९-कमला और १०- छिन्न मस्ता महा देवी।

चित्रों में यदि छिन्न मस्ता को देखा जाय तो उसका अत्यन्त भयानक रूप दिखाई देता है, नृत्य करती हुई देवी जिसके एक हाथ में खड्ग और दूसरे हाथ में तलवार है; जिसका सिर कटा हुआ तीसरे हाथ में है और चौथे हाथ में पाश है, सिर से खून के फव्वारे निकल रहे है, और पास खड़ी हुई दो योगिनियां उस उछलते हुए खून को अपने मुंह से पी रही है।

परन्तु यह अपने आपमें एक महत्वपूर्ण साधना हैं, और प्राचीन काल से ही इस साधना को दस महाविद्याओं में सर्वाधिक प्रमुखता दी गई हैं, क्योंकि यही एक मात्र ऐसी साधना है, जो वायुगमन प्रक्रिया की श्रेष्ठतम साधना है।

वायुगमन प्रक्रिया

मैंने ऊपर शीर्षक के अन्तर्गत छिन्न मस्ता साधना की दो विशेषताएं स्पष्ट की है जिसमें एक वायुगमन प्रक्रिया है, दस महाविद्याओं में केवल यही एक ऐसी साधना है, जिससे साधक अपने शरीर को सूक्ष्म आकार देकर आकाश में विचरण कर सकता है, और वापिस पृथ्वी पर उसी रूप और आकार में आ सकता हैं, प्राचीन शास्त्रों में सैकड़ों स्थानों पर वर्णन आया है, कि नारद आदि ऋषि जब चाहे तब ब्रह्माण्ड के किसी भी लोक में चले जाते थे, विचरण करते थे, और कुछ ही क्षणों में वापिस आ जाते थे।

आज का विज्ञान भी इस बात को स्वीकार करने लगा है कि यदि शरीर में विशेष वर्णों (या अक्षरों-जिन्हें अक्षर मंत्र कहा जाता है) की ध्वनि का निरन्तर गुंजरण किया जाय तो शरीर स्थित भूमि तत्व का लोप हो जाता हैं, और वह शरीर वायु से भी हलका हो कर आकाश में ऊपर उठ जाता है। जब उसी वर्ण या मंत्र का विलोम मंत्र जप या विलोम क्रम किया जाता है, तो वापिस शरीर में भूमि तत्व का प्रादुर्भाव होने लगता है. और मनुष्य पुनः अपने मूल स्वरूप में पृथ्वी पर उतर आता है।

रूस और अमेरिका में पिछले तीस वर्षों से इस चिन्तन पर शोध हो रहा है, और अब जा कर उन्हे इस क्षेत्र में सफलता मिली है। उन्होने यह स्वीकार किया है कि बिना भारतीय शास्त्र अथवा बिना भारतीय तंत्र को समझे इस क्षेत्र में पूर्ण सफलता नही मिल सकती।

जनवरी ८९ के विशेषांक में इस संबंध में काफी कुछ प्रकाश डाला गया है, कि विज्ञान किस प्रकार से भारतीय तंत्र का सहारा लेने लगा है और इसके माध्यम से वे किस प्रकार से सफलता प्राप्त कर रहे है।

जब भूमि तत्व का लोप हो जाता है, तो मनुष्य का शरीर गुरुत्वाकर्षण से मुक्त हो जाता है, और वह ऊपर उठकर शून्य में विचरण करने लग जाता है ऐसी स्थिती में उसका शरीर हवा से भी सूक्ष्म हो जाने की वजह से पृथ्वी के किसी भी भाग पर एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने में उसे सुविधा होती है और वह मनोवांछित स्थान पर कुछ ही क्षणों में जा कर पुनः लौट आता है।

इस प्रकार की सिद्धि के लिये भारतीय तंत्र में एक मात्र "छिन्नमस्ता साधना" को ही प्रमुखता दी है।

अदृश्य सिद्धि

यद्यपि विशेष रूप से तैयार की हुई 'पारद गुटिका' से व्यक्ति अदृश्य हो सकता है, परन्तु रसायन का क्षेत्र अपने आप में अलग है और अब भारतवर्ष में पारद संस्कार करने वाले व्यक्ति बहुत कम रह गये है जो कि सभी बावन सस्कार संपन्न कर सके, और अदृश्य गुटिका को तैयार कर सके। मैंने स्वयं अपने जीवन में अदृश्य गुटिका के सभी संस्कारों को सीखा है, और मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि पारे के कुछ विशेष संस्कार सम्पन्न कर उसके द्वारा गुटिका तैयार की जा सकती है, जिसे 'अदृश्य गुटिका' कहते है, और उसे मुंह में रखते ही व्यक्ति अदृश्य हो जाता है।

परन्तु यही क्रिया मंत्र साधना के माध्यम से आसानी से हो सकती है, यह कोई जटिल क्रिया पद्धति नहीं है, यदि साधक निश्चय कर ही ले, और इस तरफ पूरा प्रयत्न करे तो छिन्न मस्ता साधना की विशेष क्रिया के द्वारा वह अपने शरीर को अदृश्य कर सकता है। ऐसी स्थिति में वह तो प्रत्येक व्यक्ति या प्राणी को देख सकता है, परन्तु दूसरे व्यक्ति उसको नहीं देख सकते। वह जब छिन्न मस्ता मंत्र का विलोम मंत्र जप संपन्न करता है, तभी वह पुनः साकार होता है, और लोग उसे देख पाते है।

ये दोनों ही क्रियाएं या ये दोनों ही साधनाएं अपने आपमें अत्यन्त उच्च और महान है, ये ही दो ऐसी साधनाएं है, जिसकी वजह से पूरा संसार भारत के सामने नतमस्तक रहा है। तिब्बत के भी कई लामा इस प्रकार की विद्या को सीखने के लिए भारतवर्ष में आते रहे और उन्होंने श्रेष्ठ साधकों से छिन्न मस्ता साधना का पूर्ण प्रामाणिक ज्ञान प्राप्त कर इन महानताओं में सफ-लताएं प्राप्त की, और अपने अपने क्षेत्र में अद्वितीय सिद्ध हो सके।

दृढ़ संकल्प

इस प्रकार की साधना के लिए दृढ़ संकल्प-शक्ति चाहिए। जो साधक अपने जीवन में यह निश्चय कर लेते है, कि मुझे अपने जीवन में कुछ कर के दिखाना है मुझे अपने जीवन में साधनाओं में सफलता पानी ही है, और कुछ ऐसी साधनाएं सम्पन्न करनी है, जो अपने आप में

अद्वितीय हो, जो अपने आपमें अचरज भरी हो और जिन साधनाओं को सम्पन्न करने से संसार दांतों तले उंगली दबा कर यह अहसास कर सके, कि वास्तव में ही भारतीय तंत्र अपने आपमें अजेय और महान है, उन साधकों को दृढ़ निश्चय के साथ छिन्नमस्ता साधना में भाग लेना चाहिए।

सरल साधना

यह पूर्ण रूप से तांत्रिक साधना है, परन्तु तंत्र के नाम से घबराने की जरूरत नहीं है, तंत्र तो अपने आपमें एक सुव्यवस्थित क्रिया है, जिसके माध्यम से कोई भी साधना भली प्रकार से सम्पन्न हो पाती है, तंत्र के द्वारा निश्चित और पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती ही है, जो साधक सौम्य हो, सरल हो, और अपने जीवन में किसी भी प्रकार के देवी देवताओं को मानते हो, वे साधक भी छिन्न मस्ता साधना सम्पन्न कर सकते हैं, और मैं तो यहां तक जोर दे कर कहूंगा, कि उन्हें अपने जीवन में निश्चय ही छिन्न मस्ता साधना सम्पन्न करनी चाहिए।

यों तो पूरे वर्ष में कभी भी किसी भी शुभ दिन से छिन्न मस्ता साधना प्रारम्भ की जा सकती है, परन्तु कार्तिक शुक्ल १५ अर्थात् १३-११-८९ को छिन्न मस्ता जयन्ती है, अतः इस दिन तो छिन्न मस्ता साधना प्रारंभ करनी ही चाहिए, मैं महान योगीराज भूर्भुआ बाबा से प्राप्त उस गोपनीय और दुर्लभ छिन्न मस्ता साधना को पत्रिका साधकों के सामने स्पष्ट कर रहा हूँ, जो कि अभी तक सर्वथा गोपनीय रही है परन्तु जो प्रामाणिक है और निश्चय ही सफलता देने वाली है।

छिन्न मस्ता साधना प्रयोग

साधक छिन्न मस्ता के दिन (या किसी भी दिन) स्नान करके पूजा स्थान में बैठ जाय और सामने लकड़ी के बाजोट पर कलश स्थापन कर दे, उसके बाद साधक कलश के सामने नौ चांवलों को ढेरियां बनाकर उस पर एक-एक सुपारी रख कर उन नौ ग्रहों की पूजा करे, और फिर एक अलग पात्र में गणपति को स्थापन कर उसकी संक्षिप्त पूजा करे।

इसके बाद अपने सामने एक लकड़ी के बाजोट पर नया पीला वस्त्र बिछावें तथा कपड़े के ऊपर शुद्ध घी से सोलह रेखाएं नीचे से ऊपर की ओर खींचें। इन रेखाओं के मध्य में सिन्दूर लगावे, सिन्दूर के ऊपर प्रत्येक रेखा पर नागरबेल का पान रखें इन सोलह स्थानों पर पान रख कर अक्षत और अक्षत के ऊपर लोंग या इलायची रख कर इन रेखाओं के पीछे श्रेष्ठ "छिन्न मस्ता यंत्र को" स्थपित करें। यह यंत्र तांबे पर बना हुआ, पूर्ण रूप से प्रभावयुक्त ओर मंत्र सिद्ध होना चाहिए फिर अपने हाथ में पुष्प और अक्षत लेकर निम्न प्रकार से भगवती श्री छिन्न मस्ता देवी का ध्यान करे।

छिन्न मस्ता ध्यान

प्रत्यालीढपदां सदैव दधतीं छिन्नं शिर कर्तृका
न्दिग्वस्त्रां स्वकबन्ध शोणित सुधा धाराम्पिबन्तीमुदा
नागाबद्ध शिरोमणिन्त्रि नयनां हृद्युत्पलालं कृतां
रत्यासक्त मनोभवो परिद्दढान्ध्यायेज्जवा-सन्निभाम्।

इस प्रकार ध्यान कर जो हाथ में पुष्प और अक्षत है, वे अपने सिर पर चढ़ा ले, इसके बाद सामने शंख पात्र स्थापित कर 'ॐ शंखायै नमः' उच्चारण करते हुए उस शंख में जल, अक्षत, और पुष्प डाले फिर इस शंख को दोनों हाथों में लेकर भगवती छिन्न मस्ता का ध्यान करते हुए निम्न मंत्र से उसका आहवान करें।

छिन्न मस्ता आह्वान

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं छिन्नमस्ता सर्व-जन-मनो हारिणी, सर्व-मुख स्तंभिनी, सर्व-स्त्री-पुरुषा कर्षिणी वन्दी शंखेनात्रोटय त्रोटय सर्व-शत्रूणां भंजय-भंजय द्वेषिं दलय दलय निर्दलय निर्दलय सर्व शत्रूणां स्तम्भय स्तम्भय मोहनास्त्रेण द्वेषिं उच्चाटय उच्चाटय सर्व-वशं कुरु कुरु स्वाहा। देवि छिन्नमस्ता कामिनी

गणेश्वरि इहागच्छ इह तिष्ठ ममोपकल्पितां पूजां गहाण मम सपरिवार रक्ष रक्ष नमः ।

ऐसा कह कर हाथ में लिये हुए पुष्प और अक्षत को इन सोलह घृत धाराओं के सामने चढ़ा दें ।

फिर हाथ में जल लेकर निम्न विनियोग पढ़ कर जल छोड़ दें ।

ॐ अक्षय श्री छिन्न मस्ता देवी जगत निवासनी अदृश्य सिद्धि शून्य गमन विजयै मम सिद्धि देहि देहि प्राण देहि देहि शून्यता देहि देहि मम अमुक गौत्र अमुक शर्मा ह गुरूत्वाकर्षण शक्ति नाशय शून्य सिद्धि प्राप्तर्थ शक्ति स्याद विनियोग ।

इस साधना में छिन्न मस्ता यंत्र का विशेष महत्व है क्योंकि वह महा छिन्न मस्ता प्रयोग से सिद्ध किया हुआ होना चाहिए, और उसके प्रत्येक अक्षर से प्राण प्रतिष्ठा की हुई होनी चाहिए, फिर इस यंत्र को अलग पात्र में जल से धो कर स्नान करा कर इस पर कुंकुम की सोलह बिन्दियां लगावे, और निम्न मन्त्र उच्चारण करता हुआ, उस यंत्र में लघु प्राण प्रतिष्ठा पुनः करें ।

लघु प्राण प्रतिष्ठा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं औं हंसः सौहं, सौहं हंस छिन्नमस्ता प्राणा इह प्राणाः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्री ॐ आं ह्रीं क्रो यं रं लं वं शं षं सं हं औं हंसः सोहं, सोहं हंसः छिन्नमस्ता जीव इह स्थितः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्री क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं औं हंसः सोहं, सोहं हंसः शिवः श्री चक्रस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः श्रोत्रजिव्हा घ्राणा-दीनि इहैवागत्य अस्मिन् चक्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ।

लघु प्राण प्रतिष्ठा करने के बाद यंत्र की संक्षिप्त पूजा करे, उस पर पुष्प समर्पित करे अक्षत और भोग लगावे फिर यंत्र के सामने एक त्रिकोण बना कर उस पर चावल की ढेरी बनावे और शुद्ध घृत का दीपक लगा दें, फिर इस दीपक की चन्दन पुष्प, धूप दीप नैवैद्य से पूजन करे, और पूजन के तुरन्त बाद दोनों हाथों से दीपक बुझा दें और प्रणाम करे तत्पश्चात् छिन्न मस्ता के मूल मंत्र का इक्यावन माला मंत्र जप करे ।

छिन्न मस्ता मूल मन्त्र

श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं व ज्र वै रो च नी ये हूं हूं फट् स्वाहा ।।

जब इक्यावन माला मंत्र जप हो जाय तब भगवती देवी की आरती करे, और क्षमा स्तोत्र का उच्चारण करें ।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनं
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वरि
मन्त्र–हीनं क्रिया-हीनं भक्ति-हीन सुरेश्वरि,
यत्पूजितं मया देवी परिपूर्ण तदस्तु मे ।।

इस प्रकार प्रयोग सम्पन्न होता है, साधक को नित्य इसी प्रकार प्रयोग करना चाहिए, ग्यारह दिन तक प्रयोग करने पर शून्य सिद्धि एवं अदृश्य सिद्धि प्राप्त हो जाती है, यदि एक दिन प्रयोग करता है, तो छिन्न मस्ता सिद्धि प्राप्त हो जाती है ।

वास्तव में ही यह शिष्य वर्ष है, और प्रत्येक साधक को इस दुर्लभ प्रयोग को अवश्य ही सम्पन्न कर सफलता प्राप्त करनी चाहिए ।

अब हर तरह का इलाज संभव है

वाकसा के द्वारा

और आप भी यह सब कुछ कर सकते हैं

(१८-११-८९)

सिद्धाश्रम पंचांग के अनुसार मार्गशीर्ष कृष्ण ६ तदनुसार १८-११-८९ को "तंत्र सिद्धि दिवस" है, यह दिन तंत्र के नाम ही समर्पित है, और कहते हैं, कि किसी भी प्रकार की तंत्र साधना यदि इस दिन की जाती है, तो अवश्य ही सिद्धि प्राप्त होती है।

और हम इसी दिवस के अवसर पर एक महत्वपूर्ण दुर्लभ तथा गोपनीय तंत्र प्रयोग प्रस्तुत कर रहे हैं, आपके लिए।

शीर्षक पढ़ कर कुछ अटपटा सा लग सकता है, परन्तु तन्त्र के द्वारा सब कुछ संभव है, आवश्यकता है, तन्त्र को भली प्रकार से समझने की, उसके नियम और उपनियमों के अनुसार कार्य करने की, तथा पूर्ण निष्ठा के साथ साधना सम्पन्न करने की।

और यदि इसी निष्ठा के साथ साधना सम्पन्न की जाती है, तो फिर असफलता मिल ही नहीं सकती, क्योंकि ये मन्त्र और साधनाएं अपने आप में अचूक है, ये सामग्री और ये उपकरण अपने आप में प्रामाणिक है, और आप समर्थ एवं योग्य साधक हैं, तो फिर

साधना सिद्धि में न्यूनता कहां रह सकती है।

पश्चिम दीवाना है, इस विज्ञान के पीछे

इस समय यूरोप में चालीस हजार लोग इससे मिलती जुलती साधना सम्पन्न कर हजारों हजारों लोगों का इलाज कर रहे हैं, और वे अपने अपने क्षेत्र में अद्वितीय सफलता प्राप्त कर रहे हैं, उन लोगों में एक लालसा एक ललक उभर आई है, इन सब अज्ञात रहस्यों को जानने की, उनकी इच्छा अत्यधिक बलवती हो उठी है, मृत आत्माओं से बात चीत करने की, और उनके द्वारा गोपनीय रहस्यों को प्राप्त करने की, और इस क्षेत्र में वे सफल भी हुए हैं, यूरोप में तो वे बाकायदा पाठ्यक्रम चलाते है, और मृत आत्माओं को बुलाने और उनसे बात करने की कला सिखाते है। इस प्रकार के पाठ्यक्रम में प्रवेश करने वाले युवकों की लम्बी कतार है, वे यह सब कुछ जान लेना चाहते है, इस प्रकार के भारतीय तंत्र को अपने जीवन में आत्मसात कर लेना चाहते है, और अब इस संस्था की शाखाएं केवल लन्दन में ही नहीं अपितु यूरोप के अन्य देशों में भी खुलने लगी है, और वे यह सब कुछ सीखने के लिए उताबले हैं।

जहां लैजेरिस की आत्मा करती है इलाज

इस समय यूरोप में जेड. एन. मैरी की धूम है, वह जहां भी जाती है, हजारों लोग उसके पीछे पीछे चलते रहते है, वह सप्ताह में केवल एक बार लोगों का इलाज करती है, उसके इलाज कराने वालों में सैकड़ों ही नहीं हजारों व्यक्ति हैं, जो अपने कठिन और असाध्य रोगों से ग्रस्त हैं, जो अस्पतालों में इलाज पर हजारों डालर खर्च करके भी कुछ प्राप्त नहीं कर पाये हैं, वे भी जब जेड. एन. मेरी से भेंट करते हैं, तो मेरी एक क्षण में ही उसकी आंखों में झांक कर उसके रोग का पता लगा लेती है, और उस रोग का सारा इतिहास इस प्रकार से बयान करती है, कि जैसे उसके सामने सब कुछ लिखा हुआ हो, वह यहां तक बता देती है, कि यह रोग कब प्रारम्भ हुआ और इसके लिए क्या क्या इलाज किया जा चुका है, साथ ही साथ वह यह भी बता देती है, कि यह रोग कितना असाध्य और कठिन है।

इसके बाद मेरी उसके शरीर के उस विशेष भाग को स्पर्श करती है, जहां रोग है और वह उसी क्षण ठीक हो जाता है, यहां तक कि उसने प्रसिद्ध अंग्रेजी उपन्यासकार एन. वीन के कुबड़ेपन को केवल हाथों के स्पर्श से ही ठीक करके पूरे यूरोप में तहलका मचा दिया था।

हालीवुड की प्रसिद्ध हिरोइन ईचन की छोटी बेटी कमजोर तो थी, ही उसे आंखों से भी बहुत कम दिखाई देता था, वह लगभग सात वर्ष की हो गई थी, फिर भी वह आदमी और स्त्री में भेद नहीं कर पा रही थी, यों वह पढ़ने लिखने में तेज थी, परन्तु उसकी आंखें इतनी अधिक कमजोर थी, कि उसे सामने स्पष्ट मनुष्य की आकृति दिखाई नहीं देती थी, केवल हलके से धब्बे नजर आते थे।

उसकी आंखों के इलाज के लिए ईचन ने पानी की तरह पैसा बहाया, परन्तु कुछ भी सफलता नहीं मिली, नेत्र विशेषज्ञों ने स्पष्ट रूप से बता दिया कि इसकी आंखों की ज्योति आपरेशन से भी संभव नहीं है, यदि हठपूर्वक आपरेशन किया भी गया तब भी यह ज्यादा सभावना है, कि अभी जो छोटे बड़े धब्बे दिखाई दे रहे हैं, वे भी दिखाई देना बन्द हो जाय, और कहीं वह पूरी तरह से अन्धेपन का शिकार न हो जाय।

तब ईचन ने अंतिम दाव लगाया और मेरी से साक्षात्कार का समय मांगा, दो महीने बाद उसे पांच मिनट का समय दिया गया, ठीक समय पर जब ईचन अपनी सात वर्ष की बेटी को ले कर मेरी के सामने पहुँची तो मेरी ने देखते ही बता दिया कि इसकी आंखों की ज्योति लगभग समाप्त है, और उसे लाल पीले धब्बों के अलावा कुछ भी दिखाई नहीं देता, इसके बाद मेरी ने उसकी दोनों आंखों पर अपनी उंगलियों से स्पर्श किया और तीस सेकेण्ड के बाद अपनीं उंगलियां हटा दी, वह बालिका

उसी क्षण से साफ साफ देखने लगी और पहली बार अचरज के साथ उसने इस दुनिया को देखा।

ऐसे सैकड़ों किस्से हैं, मेरी पर कई पुस्तकें लिखी जा चुकी है, और लोग मेरी से मिलने के लिए बेताब हैं, कुछ लोगों ने उसे फ्राड बताया, परन्तु जब एक ही सेकण्ड में कुबड़ापन पूरी तरह से ठीक हो गया, ईचन की बच्ची की आंखों की रोशनी पूर्ण रूप से वापिस प्राप्त हो गई, तो फिर संदेह की कोई गुंजाइस ही नहीं थी, जो फ्राड कह कर विरोधी हो हल्ला कर रहे थे, उनको चुप रह जाना पड़ा।

" वर्ड न्यूज " से संबंधित पूरे विश्व के समाचार पत्र के संवाददाता मेरी से इन्टरव्यू का समय ले कर उनसे मिले और पूछा कि वह यह सब कुछ कैसे कर लेती है, तो उसने बताया कि मैंने एक भारतीय योगी से यह कला सीखी थी, जब मैं घूमने के लिए भारतवर्ष गई थी और केदारनाथ की तरफ अकेले ही घूम रही थी।

जब मैं ध्यानस्थ होती हूं, तो फ्रांस के प्रसिद्ध चिकित्सक 'रिजविन' की आत्मा मेरे शरीर में प्रवेश कर जाती है, और जो कुछ इलाज होता है, वह रिजविन की आत्मा ही करती है, मैं उस समय अपने होश में नहीं रहती हूं, यह अलग बात है कि मुझे आत्मा के आह्वान का ज्ञान है, और उन आत्माओं की भीड़ में से जब मैं रिजविन की आत्मा को बुलाती हूं, तो वह मेरे शरीर में प्रवेश कर जाता है, उस समय मैं अर्धचैतन्य अवस्था में होती हूं, पर रिजविन के माध्यम से मुझे उसके रोग का पूरा हाल मालूम पड़ जाता है, और जब मैं उसके शरीर को स्पर्श करती हूं तो उ का रोग समाप्त हो जाता है।

जब संवाददाताओं ने मेरी को पूछा कि रिजविन की आत्मा को बुलाने के लिए आप कौन सी टेक्निक या विधि को अपनाती हैं, तो वह " टॉप सीक्रेट " कह कर मुस्करा कर चुप हो गई।

जहां वाकसा के द्वारा इलाज होता है

आत्मा को बुलाने और उनसे सलाह लेने अथवा आत्माओं के द्वारा कार्य करवाने की पद्धति भारतवर्ष में लम्बे समय से प्रचलित रही है, आत्मा से सैकड़ों समस्याएं सुलझाई जाती है, कई बार किसी व्यक्ति की दुर्घटना में मृत्यु हो जाती है, और कोई चाबी, कोई डायरी या महत्वपूर्ण कागजात कहां रखे हुए हैं, इसका पता उस आत्मा को बुला कर ही मालूम किया जा सकता है, यदि किसी की हत्या हो जाती है, तो उस आत्मा का आह्वान कर हत्या के रहस्य की गुत्थी सुलझाई जा सकती है, यदि कोई व्यक्ति अचानक मर जाता है, तो हमें यह मलाल रहता है, कि वह अंतिम समय में क्या कहने वाला था, इस प्रकार की उसकी इच्छा उसकी आत्मा को बुलाकर मालूम की जा सकती है।

इस क्षेत्र में हिमाचल प्रदेश सबसे आगे है, वहां पर सैकड़ों लोग इस विद्या को जानते हैं, वे आत्मा को आसानी से बुला लेते हैं, और उससे बात करा लेते हैं, हिमाचल प्रदेश में कुल्लू, मनाली, शिमला आदि दर्शनीय और रमणीय स्थान है, अधिकतर पर्यटक इन स्थानों को देखने के लिए या घूमने के लिए जाते हैं, पर इनमें से आधे लोग उन लोगों के पास पहुँचते हैं, जो आत्मा का आह्वान करने की कला जानते है, और वे अपने पिता, भाई या मृत पति की आत्मा को बुलाने का आग्रह करते हैं, और उससे बातचीत कर अपने मतलब के रहस्य जान लेते हैं, वास्तव में ही यह ज्ञान अपने आप में प्रामाणिक बन गया है।

हिमाचल प्रदेश में " वाकसा " का बहुत अधिक महत्व है, जिस प्रकार से पश्चिम में मेरी के शरीर में रिजविन की आत्मा प्रवेश करती है, और लोगों का इलाज करती है, उसी प्रकार से हिमाचल प्रदेश वाले " वाकसा " का आह्वान करते हैं, और इस आत्मा को अपने शरीर में प्रवेश दे कर कठिन से कठिन रोगों का इलाज कर लेते हैं, " वाकसा " धनवन्तरी की

तरह ही हिमाचल प्रदेश का एक श्रेष्ठ चिकित्सक रहा है, और आज से सैकड़ों वर्ष पहले उसका नाम पूरे भारत वर्ष में था, उसकी आत्मा के द्वारा असाध्य और कठिन रोगों का इलाज किया जाने लगा है, हिमाचल प्रदेश में एक दो नहीं सैकड़ों ऐसे लोग हैं, जो ज्यादा पढे लिखे नहीं है, पर 'वाकसा' की आत्मा को बुलाने की तन्त्र विधि जानते हैं, और उसके द्वारा इलाज कर लेते हैं, ये लोग केन्सर, अन्धता, मस्तिष्क रोग और इससे भी ज्यादा असाध्य रोगों का इलाज करते है, और पूरे भारत वर्ष में इसकी चर्चा चल रही है।

"वाकसा" को हम भी सिद्ध कर सकते हैं

हिमाचल प्रदेश के लोग यदि वाकसा का आह्वान कर असाध्य रोगों का इलाज करने में समर्थ हो सके हैं, तो इस वाकसा की आत्मा को हम भी आह्वान कर यह सफलता पा सकते है, इस तंत्र दिवस के अवसर पर मैं इसी गोपनीय प्रयोग को पत्रिका पाठकों के सामने रख रहा हूँ, जो कि मुझे हिमाचल प्रदेश के ही इससे संबंधित एक सिद्ध व्यक्ति ने बताई थी।

जो साधक वाकसा को सिद्ध करना चाहता है, वह प्रातःकाल उठ कर स्नान कर अपने पूजा स्थान में बैठ जाय, मेरी राय में यदि यह साधना शाम को ६ बजे के बाद या रात्रि को सम्पन्न की जाय तो ज्यादा उचित रहता है, इस साधना में किसी प्रकार का भय नहीं है, और न किसी प्रकार की हानि हो सकती है।

अपने सामने लकड़ी के बाजोट पर लाल कपड़ा बिछा दे, जो रेशमी हो, और उस पर "आत्मा आवाहन यंत्र" को स्थापित कर दें यह यंत्र प्रामाणिक होना चाहिए, फिर इसके सामने तेल का दीपक लगा दे और साधक स्वयं लाल धोती धारण कर बैठ जाय।

यदि साधक घर में यह प्रयोग नहीं करना चाहे तो शुक्रवार की शाम को किसी मजार पर जा कर कर सकता है।

यंत्र को सामने रख कर उसके सामने तेल का दीपक लगावे और यंत्र पर हीने का इत्र लगावे, सामने लोबान धूप या अगरबत्ती लगादें। फिर साधक खड़े हो कर हकीक माला से २१ माला मंत्र जप करें।

आत्मा आवाहन मंत्र

ॐ क्रीं क्रीं इलीं इलीं इचि इचि वाकसा इचि इचि इलि इलि क्रीं क्रीं फट्॥

जब २१ माला पूरी हो जाय और कानों में आवाज आवे तो तीनबार वाकसा वाकसा कह कर आवाज लगावे, ऐसा करने पर वाकसा की आत्मा साधक के शरीर में प्रवेश कर जाती है, पर ऐसी स्थिति में भी साधक पूर्णतः चैतन्य और अपने होस हवास में रहता है।

इसके बाद साधक जल से यंत्र और तेल के दीपक के चारो ओर घेरा सा बनाते हुए, छिड़क दें और कहे कि अभी आप चले जाय और जब मैं तीन बार मंत्र पढ़कर आवाज दूं तब आप मेरे शरीर में आवे और रोगों का इलाज करे।

ऐसा कहने पर वाकसा की आत्मा वापिस चली जाती है, तब उस दीपक को घर के बाहर रास्ते पर रख दें और यदि मजार पर मंत्र जप कर रहे हो, तो दीपक को वहीं रहने दे तथा यंत्र को अपने साथ ले ले।

जब यह प्रयोग करना हो, (मेरी राय में सप्ताह में एक दिन शुक्रवार को ही यह प्रयोग करना चाहिए) तब उस यंत्र को गले में पहिन ले और इसी मंत्र के उच्चारण से वाकसा की आत्मा को बुलावे तब उसे सामने बैठे हुए रोगी के रोग के बारे में जानकारी हो जायेगी और उसकी उंगलियों का स्पर्श पा कर रोग समाप्त हो जायेगा।

वास्तव में ही यह प्रयोग सरल है, और जो इसमें रूचि रखते है, जो निडर है, वे इस प्रयोग को सम्पन्न कर हजारों लोगो का कल्याण कर सकते है।

पादुका - पूजन - प्रयोग

(३०-११-८९)

शास्त्रों के अनुसार मार्ग शीर्ष शुक्ल २ को " गुरूत्व दिवस " मनाया जाता है, दूसरे शब्दों में इसे " गुरू पादुका दिवस " भी कहते हैं, अंग्रेजी तिथि के अनुसार इस वर्ष यह ३०-११-८९ को सम्पन्न हो रहा है।

एक साधक या शिष्य के जीवन में 'गुरू पादुका दिवस' का सर्वाधिक महत्व है, और वह पूर्ण श्रद्धा, भावना, एवं चिन्तन के साथ "गुरू पादुका दिवस" को सपरिवार सम्पन्न करता है।

महर्षि योगी स्वामी पीताम्बर दत्त जी के द्वारा हमें गुरू पादुका पूजन का विशेष प्रयोग प्राप्त हुआ है, जो कि अपने आप में अनुपम एवं अद्वितीय है, अगली पंक्तियों में यह पूर्णता के साथ प्रकाशित है।

जन्म लेना कोई महत्वपूर्ण कार्य नहीं है, यह तो प्रकृति का एक प्रयोग है, जिसकी वजह से जीव नर देह धारण कर जन्म लेता है, परन्तु जन्म लेने के बाद जिन संस्कारों का वह उपयोग करता है, उन्हीं अमरत्व संस्कारों के फलस्वरूप उसके नर देह का महत्व अमरत्व स्पष्ट होताहै।

जन्म देना या जन्म लेना एक सहज स्वाभाविक क्रिया है, जिसमें किसी ज्ञान, किसी चेतना या किसी संस्कार की आवश्यकता नहीं होती, मूर्ख व्यक्ति भी किसी बालक को जन्म दे सकता है, दुष्ट और पापात्मा व्यक्ति भी किसी जीवन को बालक रूप प्रदान कर सकता है, और अकुलीन, असंस्कारित तथा पशु तुल्य जीवन जीने

वाला व्यक्ति भी बालक को जन्म दे सकता है, इस दृष्टि से देखा जाय तो बालक को जन्म देना कोई महानता नहीं है, या कोई जीवन जन्म लेता है, तो यह श्रेष्ठता या महत्वपूर्ण नहीं है, यह तो प्रकृति का एक नियम है, और उस नियम के अनुरूप बालक जन्म लेता है, बड़ा होता है, और मृत्यु के मुंह में चला जाता है।

जन्म लेते ही बालक से गुरू का संबंध स्थापित हो जाता है, प्रकृति को गुरू ही माना है, गाय आदि अन्य पशुओं के बालक प्रकृति में ही जन्म लेते हैं, उनके चारों ओर ऊंची ऊंची दीवारें या अस्पताल डाक्टर या चिकित्सक नहीं होते, शुद्ध प्रकृति से उनका सीधा संबंध होता है, इसलिए जन्म लेते ही उसका प्रकृति रूपी गुरू से सीधा संबंध स्थापित हो जाता है, और वह चार छः घण्टो में ही उठ कर अपने पैरों पर खड़ा हो जाता है, विचरण करने लग जाता है, या पक्षी पंख फैला कर उड़ने की सामर्थ्य प्राप्त कर लेते हैं, या पशु दौड़ने अथवा अन्य कार्य प्रारम्भ कर देते हैं।

परन्तु मनुष्य को यह सब करने में पूरा साल लग जाता है, क्योंकि वह प्रकृति से कटा हुआ होता है, प्रकृति का सीधा संबंध उससे नहीं हो पाता, प्रकृति रूपी गुरू की थपथपाहट उसे अनुभव नहीं होती, वह ऊंची दीवारों के बीच में घिरने के बाद जन्म लेता है, इसलिए अपने पैरों पर खड़े होने में उसे पूरा एक वर्ष लग जाता है, अन्य क्रिया कलाप जो पशु या पक्षी चार छः घण्टों में सीख लेते हैं, उसे नर बालक को सीखने में तीन चार वर्ष लग जाते हैं, और यह जीवन की विडम्बना या न्यूनता ही है।

वास्तविक मानव जीवन तब प्रारम्भ होता है, जब उसके हृदय में अध्यात्म शक्तियों का विकास होने लगता है, जब उसे यह अहसास होने लगता है, कि मेरा जीवन एक क्षण-संयोग है, इसके पीछे कोई निश्चित योजना या चिन्तन नहीं है, अब मैं अपने जीवन को पूर्णता तभी दे सकता हूं, जब मुझे गुरू का चिन्तन प्राप्त हो, मेरे शरीर में और जीवन में गुरू का महत्व हो, मेरा मार्गदर्शक और जीवन में पूर्णता देने में गुरू सहायक हो, ऐसा चिन्तन आने पर ही उसके जीवन की सार्थकता प्रारम्भ होती है।

जब मनुष्य इस चिन्तन से अनुप्राणित होता है, तब वह गुरू के सतसंग में और गुरू के साहचर्य में रहने की इच्छा अनुभव करता है, और तब गुरू अपनी कृपा से उसे शक्तिपात प्रदान कर पूर्ण पुरुष बनाने की, और अग्रसर करते हैं, शक्तिपात जीवन का प्रारम्भ है, जीवन का अन्त नहीं है, जिनको शक्तिपात हो चुका होता हैं, उनको स्वयं शास्त्र, वेद, आगम, तंत्र और चिन्तन का बोध होने लग जाता है, उन्हें शिव की पूर्ण अनुभूति होने से वह शिवमय बन जाता है, और उसके हृदय में पूर्ण ज्ञान का उदय हो जाता है, ऐसे ही शिष्य को "प्रातिभ" कहते हैं।

गुरू पादुका

आज के युग में यह संभव नहीं रहा, कि शिष्य प्रति क्षण, प्रति दिन गुरू के साहचर्य में रह सके, ऐसी स्थिति में गुरू की पादुका ही उसके लिए साक्षात् गुरूमय हो जाती है, क्योंकि —

पृथिव्या यानि तीर्थानि तानि तीर्थानि सागरे ।
सागरे सर्व तीर्थानां गुरूस्य दक्षिणे पदे ।।

अर्थात संसार के सभी तीर्थ और पुण्य क्षेत्र गुरू के चरणों में साकार रूप में उपस्थित होते हैं, इसीलिए गुरू के चरणों का जल जिसको " चरणामृत " कहा जाता है, स्वीकार किया जाता है, गुरू चरण जल से स्नान कर समस्त तीर्थों के स्नान का फल प्राप्त करता है; इसलिए गुरू के चरणों में धारण की हुई खड़ाऊ या पादुका स्वयं गुरू का साक्षात स्वरूप बन जाती है, और इसीलिए शास्त्रों में इस दिवस को 'गुरू पादुका दिवस' के नाम से सम्बोधित किया है, भगवत् पाद शङ्कराचार्य ने तो कहा है, कि गुरू से भी ज्यादा महत्वपूर्ण गुरू पादुका है, उसे अपने पूजा स्थान में ठीक उसी प्रकार से स्थापित

करना चाहिए जिस प्रकार से हम सम्मान के साथ गुरू को अपने घर में श्रेष्ठ आसन पर बिठाते हैं, गुरू पादुका की उपस्थिति साक्षात् गुरू की उपस्थिति ही मानी गई है, गुरू पादुका स्तवन मूल रूप में गुरू स्तवन ही है, इसीलिए पूरे भारत वर्ष में जितना महत्व गुरू पूर्णिमा का है, उससे भी ज्यादा महत्व " गुरू पादुका दिवस " का है।

भगवान शिव ने पार्वती को समझाते हुए कहा है, कि मात्र गुरू पादुका पूजन करने से साधक की सोलह कलाएं स्वतः विकसित होने लग जाती हैं, ये सोलह कलाएं निम्न प्रकार से कही गयी है — **१- मूलाधार, २- स्वाधिष्ठान, ३- मणिपुर, ४- अनाहत, ५- विशुद्ध, ६- आज्ञा, ७- बिन्दु, ८- कला पद, ९- निर्वाधिका, १०- अर्धचन्द्र, ११- नाद, १२- नादान्त, १३- शक्ति, १४- व्यापिका, १५- समना, १६- उन्मना ।**

इन सोलह कलाओं का विकास और कुण्डलिनी जागरण हो कर जब कुण्डलिनी उर्ध्वगामी होती है, तब स्वतः साधक की 'खेचरी मुद्रा' प्रारम्भ हो जाती है और ऐसा होने पर वह शिवात्मक गुरु शिष्य से संबोधित हो जाती है।

आगे के पृष्ठों में मैं गुरु पादुका-पूजन प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूं, इससे पहले ही शिष्य को 'गुरु पादुका' प्राप्त कर अपने पूजा स्थान में या अपने कक्ष में सम्मान पूर्वक स्थापित कर देना चाहिए, और यह अहसास करना चाहिए कि यह खड़ाऊ या ये पादुकाएं साक्षात ब्रह्ममय गुरु ही सशरीर उपस्थित है और उनकी उपस्थिती में साधक निश्चित होकर अध्यात्म पथ पर निरन्तर अग्रसर होता रहता है, ऐसे साधक की कुण्डलिनी निरन्तर विकसित होती रहती है, और वह उस ब्रह्म रस का आस्वादन करने में समर्थ हो पाता है, जिसे जीवन मुक्त स्थिति या विदेह कहा जाता है।

साधक " गुरू पादुका दिवस " के दिन पूर्ण श्रद्धा के साथ स्नान कर शुद्ध श्वेत वस्त्र धारण करे, और उत्तर दिशा की ओर आसन बिछा कर अपनी पत्नी के साथ या स्वयं बैठें, सामने श्रेष्ठ लकड़ी के तख्ते पर पीला वस्त्र बिछा कर उस पर गुरू पादुका स्थापित करें, और फिर अपने सामने पूजन सामग्री रख कर गुरू पादुका पूजन कार्य सम्पन्न करें।

पादुका चिन्तन

साधक या शिष्य अपने दोनों हाथ खड़ाउओं पर रखता हुआ निम्न प्रकार से चिन्तन-उच्चारण करे—

ॐ गुरूभ्यो नमः
ॐ परम गुरूभ्यो नमः
ॐ परात्पर गुरूभ्यो नमः
ॐ परमेष्ठि गुरूभ्यो नमः
ॐ गणपतये नमः
ॐ मूल प्रकृत्यै नमः
ॐ मण्डूकाय नमः
ॐ मूलाधारयै नमः
ॐ कालाग्नि रुद्राय नमः
ॐ कूर्माय नमः
ॐ आधार शक्तये नमः
ॐ आनन्दाय नमः।
ॐ अनन्ताय नमः
ॐ पृथिव्यै नमः
ॐ सुधार्णवाय नमः
ॐ मणिद्विपाय नमः
ॐ कल्पवृक्षाय नमः
ॐ चिन्तामणि गृहाय नमः
ॐ हेमपीठाय नमः

इसके बाद बांई तरफ चावल की ढेरी बना कर उस

पर एक गोल सुपारी रख कर उसे भैरव मान कर उसकी संक्षिप्त पूजा करें, जिससे कि किसी प्रकार का कोई विघ्न उपस्थित न हो, पूजन के बाद भैरव के सामने हाथ जोड़ कर उच्चारण करें –

तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्ते दहनोपम् ।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

इसके बाद अपने बांये हाथ में थोड़े से चावल ले कर अपने चारों ओर घुमाते हुए दसों दिशाओं की ओर इस उद्देश्य से फेंके कि दसों दिशाओं का बन्धन हो सके, और किसी भी दिशा से किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित न हो तथा शरीर पर कोई दुष्प्रभाव न पड़े ।

दस दिशा बन्धन

अप सर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमिसंस्थिता : ।
ये भूता: विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ।।

अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचा: सर्वतो दिश: ।
सर्वेषामविरोधेन पाद पूजां समारभेत् ।।

आसन पूजन

इसके बाद अपने आसन को हटा कर उसके नीचे कुंकुम से त्रिकोण बनावे, और उस पर पुनः आसन बिछा दें, फिर आसन पर जल छिड़कते हुए निम्न उच्चारण करें –

ॐ क्षेत्रपालाय नमः । ॐ पृथ्वीत्यासन-मन्त्रस्य मेरूपृष्ठ ऋषिः। सुतलं छन्दः। कूर्मो देवता। आसने विनियोगः ।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरू चासनम् ।।

इसके बाद जो आसन बिछा हुआ है, उस पर निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए आसन पर केसर की पांच बिन्दियां लगावे जिससे कि आसन सिद्ध हो सके।

ॐ पृथिव्यै नमः
ॐ अनन्ताय नमः
ॐ कूर्माय नमः
ॐ विमलाय नमः
ॐ योगपीठाय नमः

इसके बाद खड़ाऊ के सामने पांच चावल की ढ़ेरियां बनावें, और उस पर एक एक गोल सुपारी रख कर केसर की बिन्दी लगावे तथा उच्चारण करें –

ॐ गुं गुरूभ्यो नमः
ॐ पं परम गुरूभ्यो नमः
ॐ पं परात्पर गुरूभ्यो नमः
ॐ पं परमेष्ठि गुरूभ्यो नमः
ॐ पं परापर गुरूभ्यो नमः

शरीर गुरू स्थापन प्रयोग

इसके बाद दाहिने हाथ से संबंधित अंगों को स्पर्श करते हुए गुरू को अपने पूर्ण शरीर में समाहित करें –

ॐ कूर्माय नमः
ॐ वैराग्याय नमः
ॐ आधार शक्तये नमः
ॐ अनैश्वर्याय नमः
ॐ पृथिव्यै नमः
ॐ अनन्ताय नमः
ॐ धर्माय नमः
ॐ सर्वतत्वात्मकाय नमः
ॐ ज्ञानाय नमः
ॐ आनन्दकन्द कन्दाय नमः
ॐ सविन्मालाय नमः

ॐ ऐश्वर्याय नमः

ॐ विकारमयकेशरेभ्यो नमः

ॐ प्रकृतमयपत्रेभ्यो नमः

ॐ पंचाशर्णबीजाढ्यकर्णिकायै नमः

इस प्रकार अपने शरीर में गुरू को स्थापित कर अपने शरीर की संक्षिप्त पूजा करें, सिर पर जल छिड़के सिर के मध्य में केसर की बिन्दी लगावे, हृदय पर केसर का लेप करें, और प्रसन्नता अनुभव करें, कि मेरे शरीर के रोम रोम में पूज्य गुरूदेव स्थापित हुए हैं, जिससे कि मेरी कुण्डलिनी स्वतः जागृत होने लगी है।

इसके बाद खड़ाऊ के दाहिनी ओर एक दूसरे लकड़ी के बाजोट पर कलश स्थापित करे, उसमें जल डाले, कलश के मुंह पर पांच या ग्यारह पत्ते रखकर उसके ऊपर नारियल स्थापित करे, कलश के मुंह पर मौली या कलावा बांधे नारियल के ऊपर यज्ञोपवीत पहनावे, और कलश के चारो ओर चारो दिशाओं की ओर केसर की विन्दी लगाते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करे।

ॐ पूर्वे ऋग्वेदाय नमः

ॐ उत्तरे यजुर्वेदाय नमः

ॐ पश्चिमे अथर्व वेदाय नमः

ॐ दक्षिणे साम वेदाय नमः

इस प्रकार कलश के चारो ओर चार बिन्दियां लगाते हुए चारो वेदों की स्थापना करे और संक्षिप्त पूजन करे

कलश के पास में शंख स्थापित करे, और उसका पूजन करे, शंख के पास ही घण्टा स्थापित करे, और उसका भी पूजन करते हुए निम्न उच्चारण करे -

आगमर्थं तु देवानां गमनार्थं तु राक्षसाम्।
घण्टानादं प्रकुर्वीत पश्चाद् घण्टा प्रपूजयेत।।

फिर कलश के आगे बारह चावल ढेरियां बनावे और उस पर एक एक सुपारी रख कर निम्न देवताओं की स्थापना करें।

१– ॐ कालाग्नि रुद्राय नमः

२– ॐ कूर्मायै नमः

३– ॐ पृथिव्यै नमः

४– ॐ धर्माय नमः

५– ॐ ज्ञानाय नमः

६– ॐ वैराग्याय नमः

७– ॐ ऐश्वर्याय नमः

८– ॐ राग्याय नमः

९– ॐ अनन्ताय नमः

१०– ॐ सर्वतत्वात्मकाय नमः

११– ॐ आनन्दमयकन्दाय नमः

१२– ॐ प्रकृतिमय पत्रेभ्यो नमः

खड़ाऊ-विनियोग

ॐ अस्य श्री पादुका मन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः गायत्रीछन्दः श्री गुरू देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

इसके बाद खड़ाऊ में गुरू प्राण प्रतिष्ठा करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें।

पादुका गुरू मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः हंसः शिवः सोऽहं हंसः स्वरूप निरुपणहेतवे श्री गुरुवे नमः

इसके बाद साधक न्यास करे -

न्यास

ॐ ह्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः
ॐ ह्रीं तर्जनीभ्यां नमः
ॐ ह्रूं मध्यमाभ्यां नमः
ॐ ह्रैं अनामिकाभ्यां नमः
ॐ ह्रौं कनिष्ठिकाभ्यां नमः
ॐ ह्रः करतलकर पृष्ठाभ्यां नम
इसी प्रकार हृदयादि न्यास करें -
ॐ ह्रां हृदयाय नमः
ॐ ह्रीं सिरसे स्वाहा
ॐ ह्रूं कवचाय हुं
ॐ ह्रैं नेत्रत्रयाय वौषट
ॐ ह्रौं शिखायै वषट
ॐ ह्रः अस्त्राय फट्

उपरोक्त न्यास करते हुए संबंधित अंगो का स्पर्श करे फिर फिर गुरु ध्यान करे ।

महा-रोगे महोत्पाते महा-देवी महा-मये ।
महा पदि महा-पापे स्मृता रक्षति पादुका ।।

तेनाधीनं स्मृतं ज्ञानं दुष्टं पत्तं च पूजितं ।
जिह्वायां वर्तते यस्य श्री परा-पादुका-स्मृतिः ।।

भोग भोगार्थिना ब्रह्म-विष्णवी-पद कांक्षिणाम ।
भक्ति रेव गुरौ देवि "नान्यः पंथा" इति श्रुतिः

इसके बाद एक अन्य पात्र में परम गुरु की स्थापना करें, स्थापना में पात्र में चावलों कीढ़ेरी बनाकर उस पर सुपारी रख कर उन्हे परम गुरु मान कर उपरोक्त प्रकार से ही न्यास करे फिर परम गुरु का ध्यान निम्न प्रकार से करे ।

परम गुरू ध्यान

गुरु भक्ति-विहीनस्य तपो विद्या कुल व्रतम् ।
सर्व नश्यन्ति तत्रैव भूषणं लोक रंजनम् ।।

गुरु भवत्यग्निना सम्यग् दग्ध्या सर्व-गतिर्दसः
श्वपचो पि परैः पूज्यो न विद्वानपि नास्तिकः ।।

परमेष्ठि गुरू ध्यान

परम गुरू के पास ही चावल की ढ़ेरी बना कर उस पर सुपारी रख कर परमेष्ठि गुरू की स्थापना करे, और संक्षिप्त पूजन कर उपरोक्त प्रकार से ही न्यास करें, और हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें –

गुरूः पिता गुरूर्माता गुरूर्देवो गुरूर्गति ।
शिवे रूष्टो गुरूस्त्राता गुरौ रूष्टे न कश्चन ।।

पादुका लय पूजन

इसके बाद साधक पादुका लय पूजन करें, जो सामने दोनों पादुकाएं स्थापित की है, दोनों पादुकाओं पर कुंकुम से त्रिकोण बनावे, और द्वादस कलाओं में से छः कलाओं की स्थापना वाम पादुका में तथा छः कलाओं की स्थापना दाहिनी पादुका में स्थापित करें –

वाम पादुका कला स्थापन

१- ॐ तपिन्यें नमः
२- ॐ तापिन्यै नमः
३- ॐ ज्वालिन्यौ नमः
४- ॐ रुच्यौ तमः
५- ॐ सूक्ष्मायै नमः

६- ॐ भोगिन्यै नमः

दाहिनी पादुका कला स्थापन

इसके बाद दक्षिण पादुका पर निम्न छः कलाओं की स्थापना करें –

१- ॐ विश्वायै नमः

२- ॐ धूम्रायै नमः

३- ॐ मरीच्यै नमः

४- ॐ बोधिन्यै नमः

५- ॐ धारिण्यै नमः

६- ॐ क्षमायै नमः

उपरोक्त सूर्य की द्वादस कलाएं कही जाती हैं, और इन कलाओं की स्थापना से दोनों पादुकाओं में पूर्ण सूर्य मण्डल स्थापित हो जाता है, इसके बाद दोनों पादुकाओं पर कलश में से जल (अमृत) छिड़कते हुए निम्न सोलह चन्द्र कलाओं की स्थापना करें, जिससे कि इन पादुकाओं में चन्द्र कलाओं के साथ साथ अमृत तत्व का प्रादुर्भाव हो सके ।

१- ॐ अमृतायै नमः

२- ॐ मानदायै नमः

३- ॐ पूषायै नमः

४- ॐ तुष्टयै नमः

५- ॐ पुष्टयै नमः

६- ॐ रत्यै नमः

७- ॐ धृत्यै नमः

८- ॐ शशिन्यै नमः

९- ॐ चण्डिकायै नमः

१०- ॐ काल्यै नमः

११- ॐ ज्योत्स्नायै नमः

१२- ॐ श्रियै नमः

१३- ॐ प्रीत्यै नमः

१४- ॐ अंगदायै नमः

१५- ॐ पूर्णायै नमः

१६- ॐ पूर्णामृतायै नमः

इस प्रकार करने के बाद बांये हाथ में केसर से चावल रंग कर दाहिने हाथ से थोड़े थोड़े चावल दोनों पादुकाओं पर डालते हुए निम्न उच्चारण करें –

१- मध्ये श्री कृष्ण आवाहयामि स्थापयामि

२- दक्षिणे वासुदेवं आवाहयामि स्थापयामि

३- पश्चिमे अनिरूद्धाय नमः स्थापयामि

४- पूर्वे वैशंपायनाय नमः स्थापयामि

५- उत्तरे जैमिन्यै नमः स्थापयामि

इसके बाद जिस पात्र में खड़ाऊ हो वह पात्र अपने सिर पर रख कर दोनों हाथों में ले कर साधक निम्न प्रकार से उच्चारण करे –

१- ॐ श्री शङ्कराचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि

२- ॐ विश्वरूपाचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि

३- ॐ पद्मपादाचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि

४- ॐ हस्तामलकाचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि

५- ॐ त्रोटकाचार्याय नमः आवाहयामि स्थापयामि

६- ॐ दत्तात्रेयाय नमः आवाहयामि स्थापयामि

७- ॐ जीवन मुक्ताय नमः आवाहयामि स्थापयामि

८- ॐ नारदं वामदेवं कपिलं आवाहयामि स्थापयामि

इसके बाद हाथों में पुष्प ले कर खड़ाऊ को सामने रख कर खड़ाऊ पर पुष्प समर्पित करते हुए निम्न उच्चारण करे –

१- ॐ गुरवे नमः गुरूं आवाहयामि स्थापयामि

२- ॐ परम गुरवे नमः परम गुरू आवाहयामि स्थापयामि

३- ॐ परात्पर गुरवे नमः परात्पर गुरू आवाहयामि स्थापयामि

४- ॐ परमेष्ठि गुरवे नमः परमेष्ठिगुरू आवाहयामि स्थापयामि

५- ॐ परम गुरवे नमः परम गुरूं आवाहयामि स्थापयामि

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प ले कर साथ में अक्षत, कुंकुम, पुष्प माला ले कर पादुका के ऊपर समर्पित करते हुए उच्चारण करें –

१- ॐ सर्वशास्त्रार्थतत्वज्ञं निखिलेश्वरानन्दाय आवाहयामि स्थापयामि

२- ॐ परमानन्दरूपेण स्वामी सच्चिदानन्द आवाहयामि स्थापयामि

३- ॐ ब्रह्मण्य रूपेण वेद व्यासाय आवाहयामि स्थापयामि

४- ॐ पूर्णत्व प्रदाय चतुर्मुख ब्रह्मा आवाहयामि स्थापयामि

सूक्ष्म गुरुतत्व मंत्र

सर्वथा गुप्त और दुर्लभ द्वादशार्ण सरसी रुह के रूप में जो गुरु मंत्र के बारह वर्ण है, वे निम्न है जो कि ब्रह्माण्ड के गुरुओं का प्रतिनिधित्व करते है साधक को स्फटिक माला से चार माला निम्न ब्रह्माण्ड गुरु मंत्र की जपनी चाहिए।

॥ स ह फ्रें ह स क्ष म ल व र यू म् ॥

इसमें प्रथम द्वादश वर्ण है अंतिम म् "वाग्भव" बीज है, इस प्रकार यह द्वादश वर्ण युक्त मंत्र तुरन्त कुण्डलिनी जागरण में पूर्ण रूप से सहायक है। यदि साधक पादुका पूजन कर उपरोक्त गुरु मंत्र (ब्रह्माण्ड गुरु मंत्र) का जप करता है, तो निश्चय हीं उसकी कुण्डलिनी और सहस्त्रार जाग्रत होता है, यह प्रामाणिक वचन है।

इसके बाद 'गुरु पादुका पंचक' का मधुरता के साथ पाठ करें

श्री गुरू पादुका पंचकम्

ॐ नमो गुरूभ्यो गुरूपादुकाभ्यो
नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः ।
आचार्यसिद्धेश्वरपादुकाभ्यो
नमो नमः श्री गुरूपादुकाभ्यः ॥१॥

ऐंकारह्रींकाररहस्ययुक्त –
श्रींकारगूढ़ार्थमहाविभूत्या ।
ओमकारमर्मप्रतिपादिनीभ्यां
नमो नमः श्री गुरू पादुकाभ्याम् ॥२॥

होत्राग्निहोत्राग्निहविष्यहोतृ –
होमादिसर्वाकृतिभासमानम् ।
यद् ब्रह्म तद् बोधवितारिणीभ्यां
नमो नमः श्री गुरू पादुकाभ्याम् ॥३॥

कामादिसर्पव्रजगारुडाभ्यां
विवेकवैराग्यनिधिप्रदाभ्यां
बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां
नमो नमः श्री गुरू पादुकाभ्याम् ॥४॥

अनंतसंसारसमुद्रतार –
नौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्यां ।
जाड्याब्धिसंशोषणवाडवाभ्यां
नमो नमः श्री गुरू पादुकाभ्याम् ॥५॥

इसके बाद साधक पांच बत्तियों और कपूर से आरती सजा कर गुरु आरती करे और परिवार के सदस्यों को प्रसाद वितरित करे ।

यह पादुका पूजन प्रयोग मात्र पूजन प्रयोग हीं नही है अपितु भारतीय तांत्रिक ग्रन्थों का अनमोल रत्न है, जो मैंने पत्रिका पाठकों के लिये प्रस्तुत किया हैं। केवल पादुका पूजन से ही पूरा शरीर झंकृत हो जाता है, रोम रोम में देवताओं का निवास और ब्रह्माण्ड के समस्त गुरुओं की स्थापना हो जाती है, और साधक की कुण्डलिनी पूर्ण रूप से चैतन्य तथा जागृत हो जाती है जिससे वह समस्त ब्रह्माण्ड को अपने आपमे समेटे हुए, पूर्ण ब्रह्मानंद का आस्वादन करने में समर्थ सफल हो पाता है । ○

नमामि !

गुरू प्रशांतं भवभीत नाशम
विशुद्ध बोधं कलुषस्य हारम् ।
आनन्द रूपं नयनाभिरामम्
श्री गुरूदेवं नितरां नमामि ॥१॥

अज्ञाननाशं नित्य प्रकाशम्
सत्चित् स्वरूपम् जगदेक मूर्तिम् ।
विश्वाश्रयं विश्व पतिम् परेशं
श्री गुरूदेवं नितरां नमामि ॥२॥

अणु महान्तम् सद् सत् परंच
यौगेक गम्यम् करूणावतारम् ।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे
श्री गुरूदेवं नितरां नमामि ॥३॥

स्वयं भुवम् शान्तमनन्त आद्यम्
ब्रह्मादि वन्द्यम् परमेश पूज्यम् ।
कालात्मकं कालभुवम् शरण्यम्
श्री गुरूदेवं नितरां नमामि ॥४॥

भोगापवर्गम् प्रतिदान शक्तम्
बन्धु सखायां सुहृदयं प्रियंच ।
अज्ञान नाशं सत् चित् प्रकाशम्
श्री गुरूदेवं नितरां नमामि ॥५॥

प्रेमाम्बुधि प्रेम रसायनच
प्रेम प्रदान निधिम द्वितीयं ।
मृत्युञ्जयं मृत्युभयापहारम्
श्री गुरूदेवं नितरां नमामि ॥६॥

ज्योतिर्मयं पूर्णमनन्त शक्ति
संसार सारं हृदयेश्वरं च ।
विज्ञान रूपं सकलार्तिनाशम्
श्री गुरूदेवं नितरां नमामि ॥७॥

स्नेहं दयां वत्सलतां विधाय
चित्त प्रमुग्ध कृतमत्रयेन ।
त्वं दीननाथं भव सिन्धु पोतम्
श्री गुरूदेवं नितरां नमामि ॥८॥